Aarati P Gupta

जन्मतिथि:	19 December 2007 Wednesday
जन्म समय:	13:12 PM
जन्म स्थान:	Delhi, India
Latitude:	30.7N Longitude: 77.17E
अयनांश:	एन सी लाहिरी 23:58:4
स्थानीय मानक समय:	12:51:08
साम्पातिक काल:	18:41:14
स्थानीय समय संशोधन:	-20:52
तिर्यक:	23.4

अवकहड़ा चक्र

लग्न	मीन
लग्नपति	गुरु
राशी	मीन
राशी स्वामी	गुरु
नक्षत्र	रेवती
नक्षत्र स्वामी	बुध
चरण	4
तिथि	दशमी शुक्ल
पाया	स्वर्ण
सूर्य सिद्धांत योग	परिघ
करण	गरिज
वर्ण	ब्राह्मण
तत्व	आकाश
वश्य	जलचर
योनि	हस्ती(स्त्री.)
गण	देव
नाड़ी	अन्त
नाड़ी पद	आदि
विहग	शिक्कावल
प्रथम अक्षर	दे, दो, च, ची
सूर्य राशि	धनु
डेकानेट	3

घात चक्र

राशी	कुम्भ
माह	फाल्गुन
तिथि	5,10,15
दिवस	शुक्रवार
नक्षत्र	अश्लेष
प्रहर	4
लग्न	सिंह
योग	वज्र
करण	बिंजनेचंक

शुभ अशुभ विचार

सौभाग्य अंक	1
शुभांक	1,2,7,9
अशुभ अंक	6,8
शुभ वर्ष	10,19,28,37,46
शुभ दिन	सोमवार, मंगलवार, गुरुवार
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
अशुभ ग्रह	शुक्र, बुध
मित्र राशि	कर्क वृश्चिक धनु
शुभ लग्न	मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर
शुभ धातु	कांस
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ समय	सायंकाल
शुभ दिशा	उत्तर पूर्व

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशी	डिग्री	नक्षत्र	नक्षत्राधिप	पद	दिशा	अवस्था
लग्न	मीन	20:56:45	रेवती	बुध	2		––
रवि	धनु	03:02:39	मूला	केतु	1	मार्गी	––
बुध	धनु	03:59:08	मूला	केतु	2	मार्गी	––
शुक्र	तुला	22:17:21	विशाखा	गुरु	1	मार्गी	स्वगृह
मंगल	मिथुन	10:49:00	अरिद्रा	राहु	2	वक्री	––
गुरु	धनु	06:08:31	मूला	केतु	2	मार्गी	मूलत्रिकोण
शनि	सिंह	14:35:60	पूर्वा	शुक्र	1	मार्गी	––
चन्द्र	मीन	27:37:39	रेवती	बुध	4	मार्गी	––
राहु	कुम्भ	07:02:45	शतभिषा	राहु	1	वक्री	––
केतु	सिंह	07:02:45	मघा	केतु	3	वक्री	––
इन्द्र	कुम्भ	21:04:11	पूर्व भाद्रपद	गुरु	1	मार्गी	––
वरुण	मकर	25:55:46	धनिष्ठा	मंगल	1	मार्गी	––
रुद्र	धनु	04:42:14	मूला	केतु	2	मार्गी	––

लग्न कुन्डली

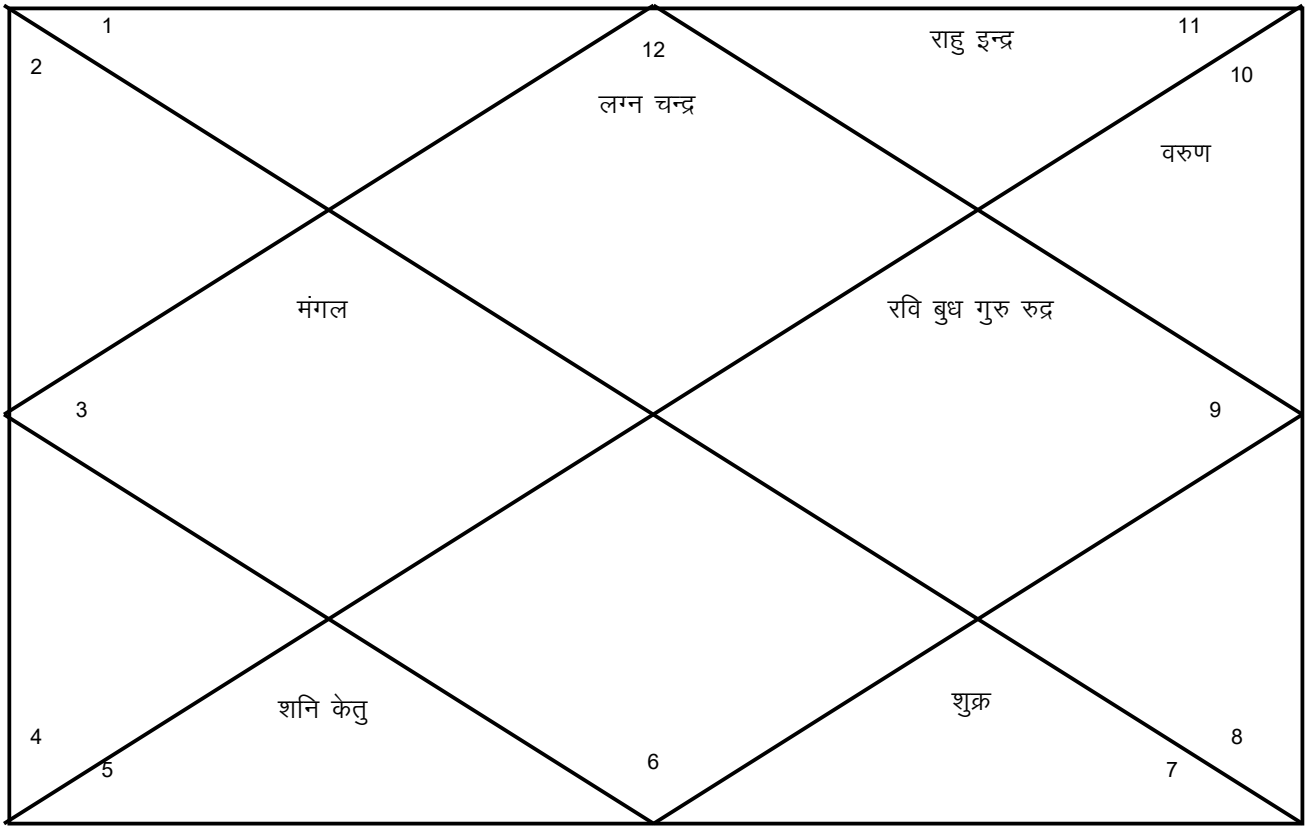

लग्न

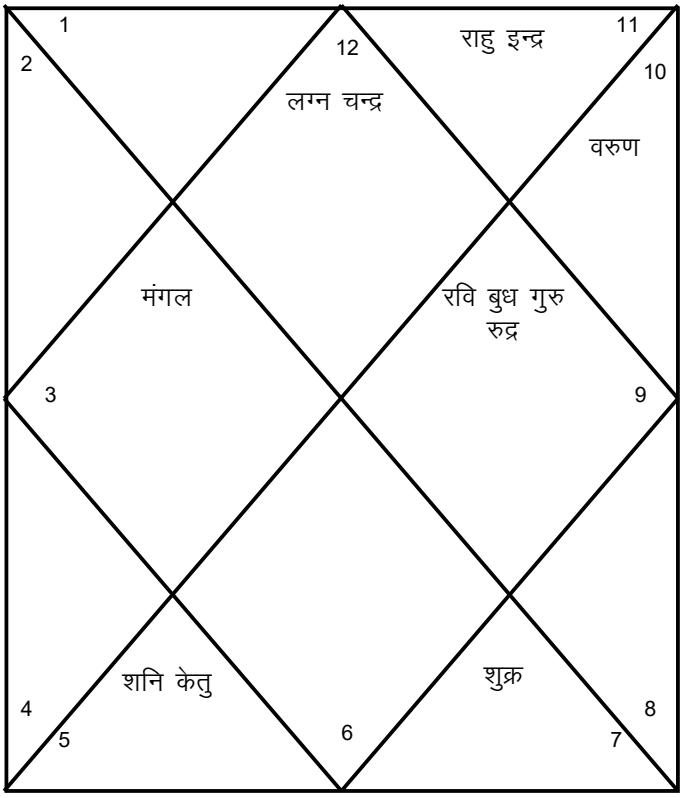

होरा

धनसम्पदा

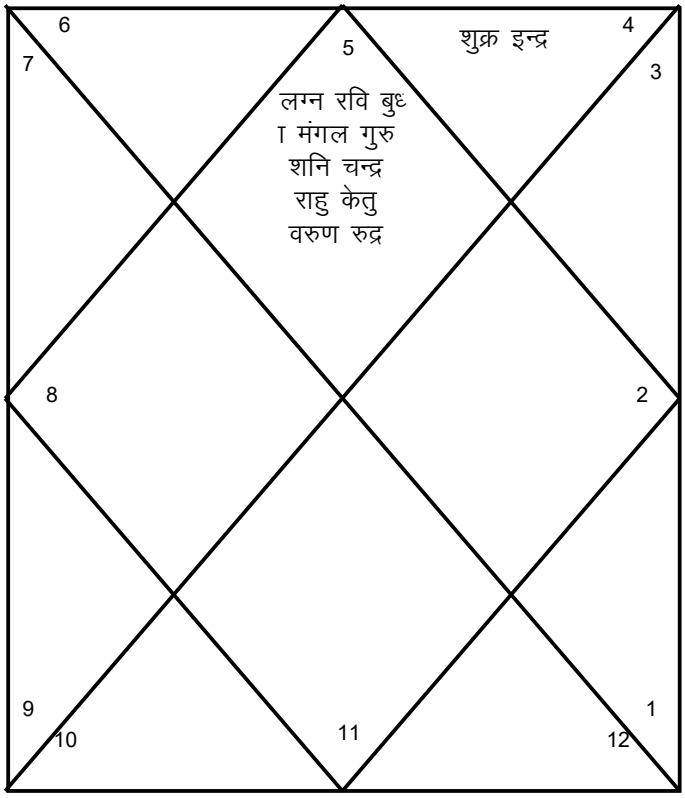

द्रेक्कान

सहोदर

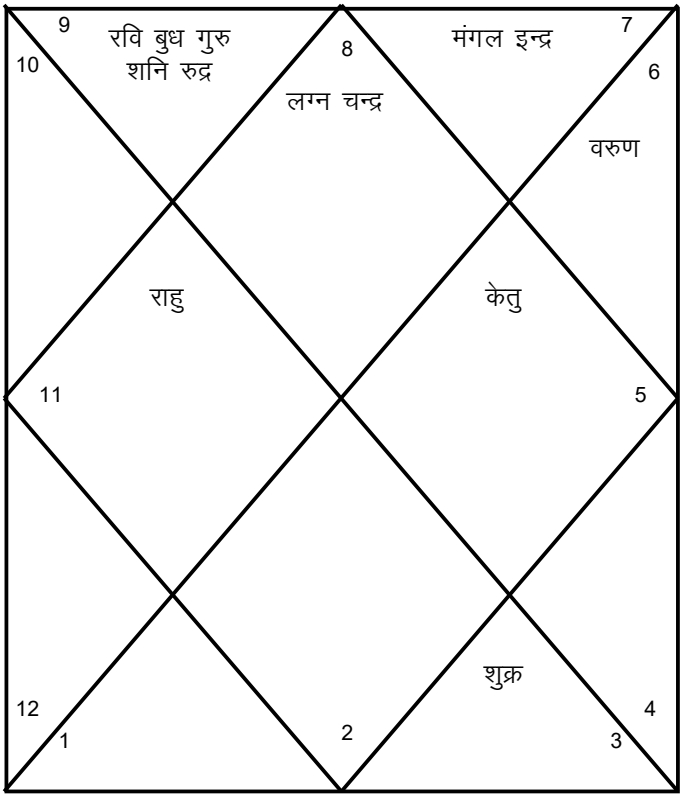

चतुर्थांश

भाग्य

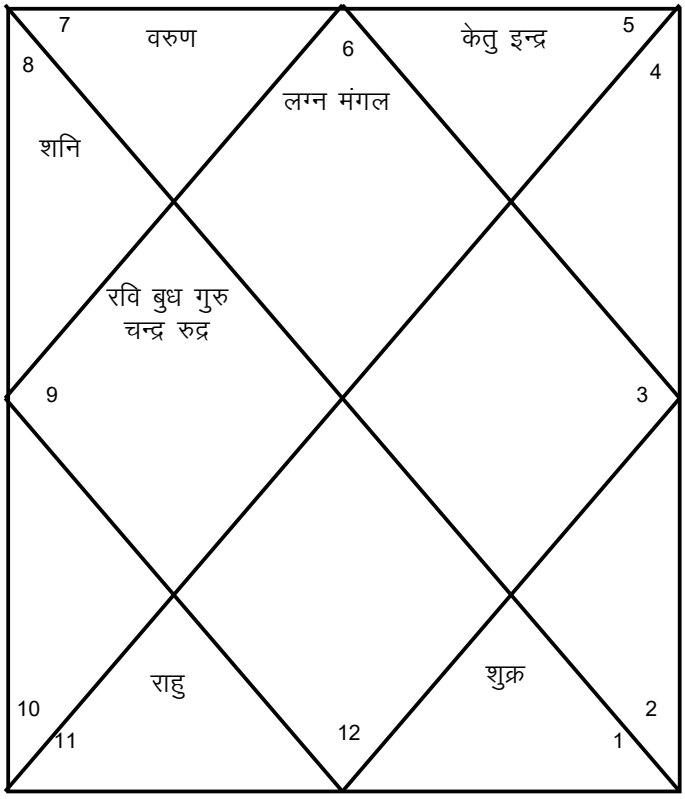

सप्तमांश — सन्तति

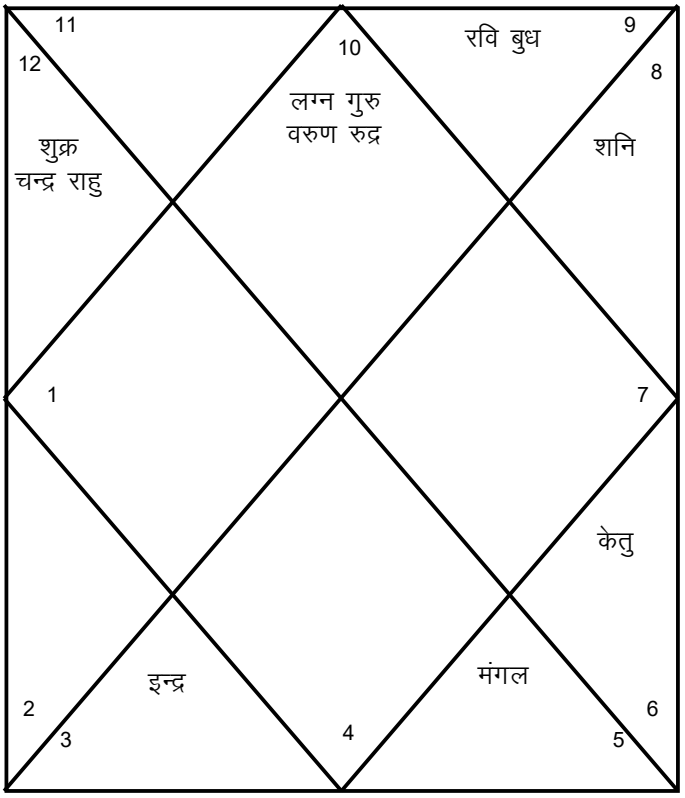

नवमांश — जीवनसाथी

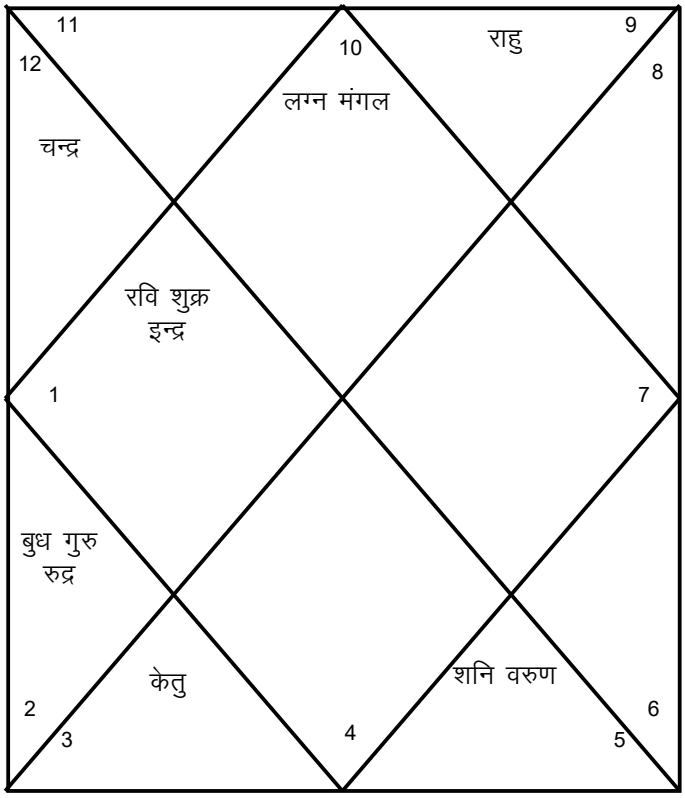

दशमांश — जीविका

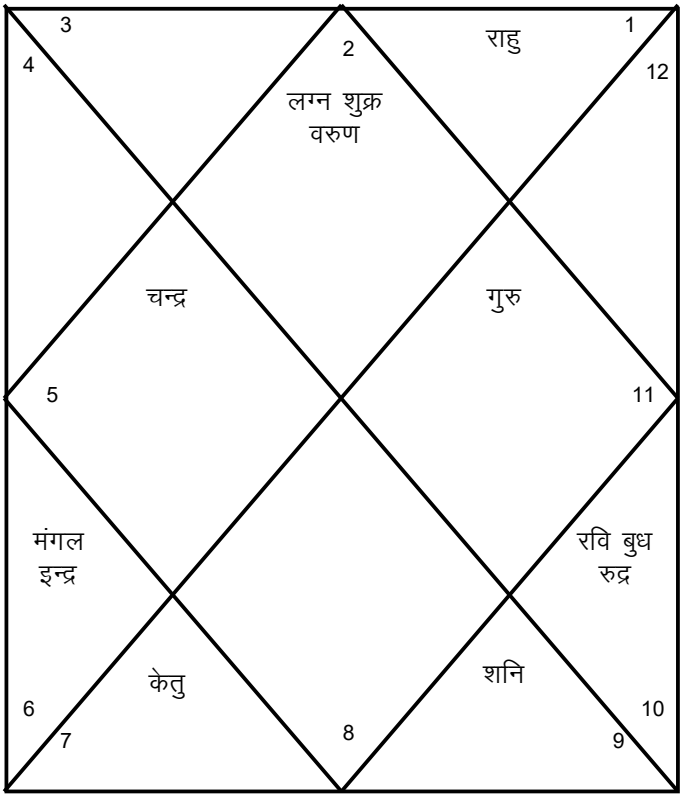

द्वादशांश — माता एवं पिता

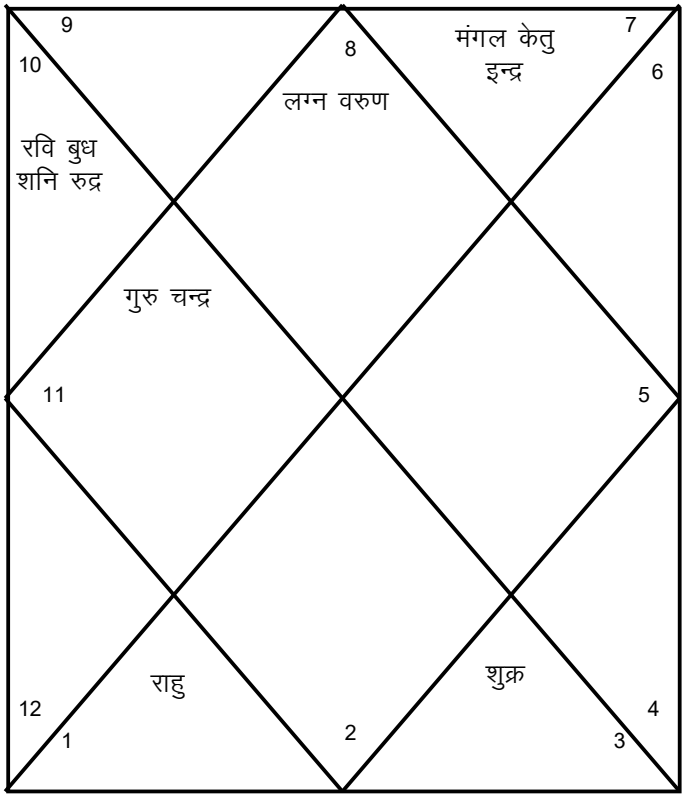

षोडशांश

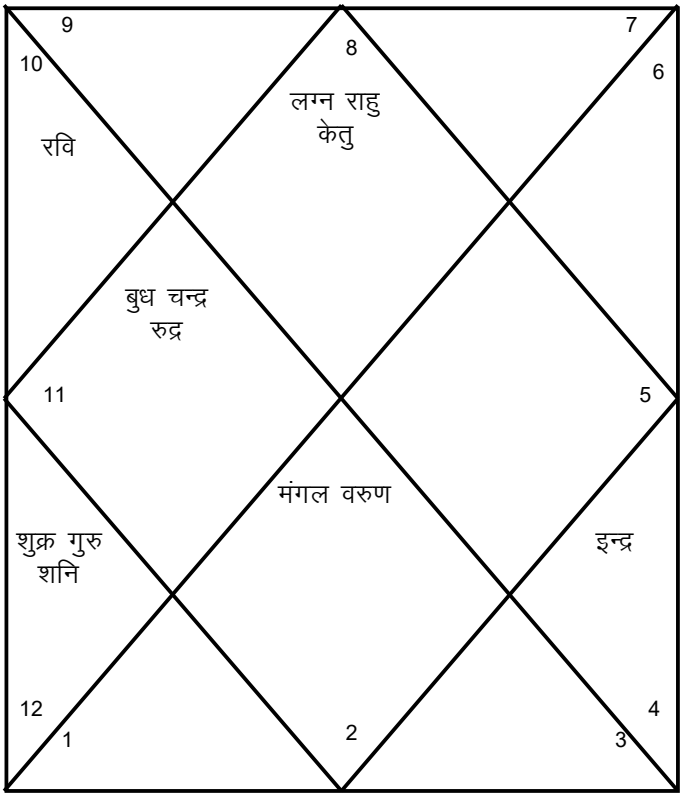

वाहन

विंशांश

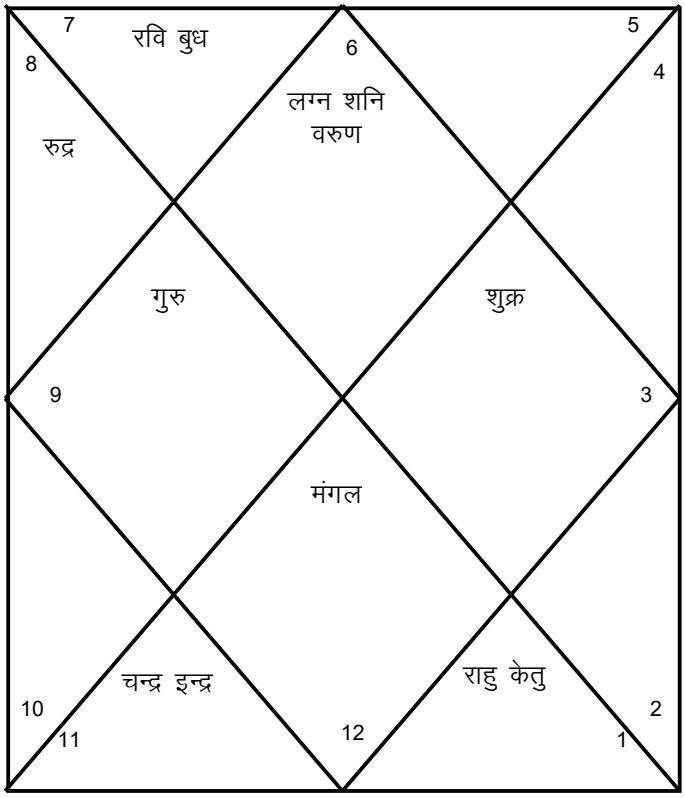

धार्मिक प्रवृत्ति

चतुर्विंशांश

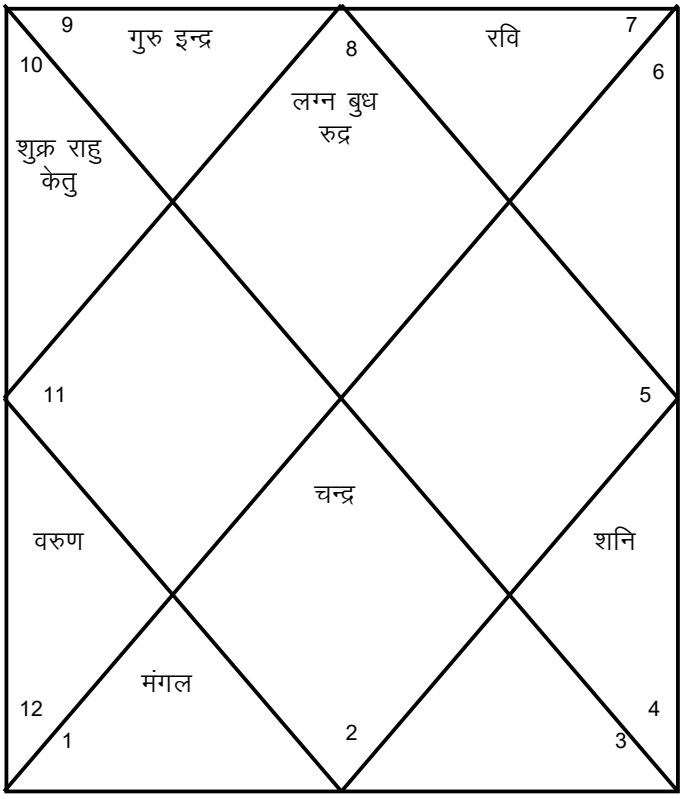

शिक्षा

सप्तविंशांश

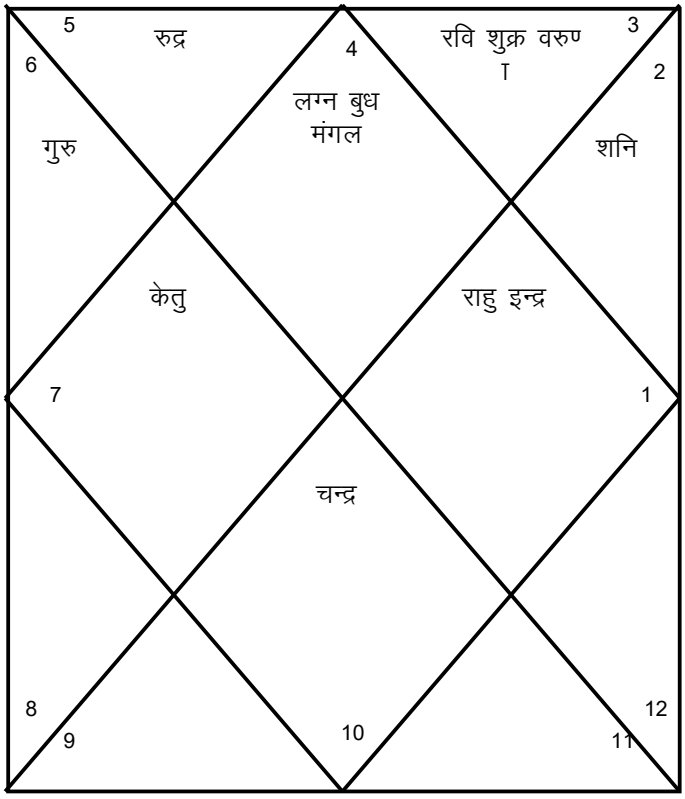

बल

त्रिंशांश — दुर्भाग्य

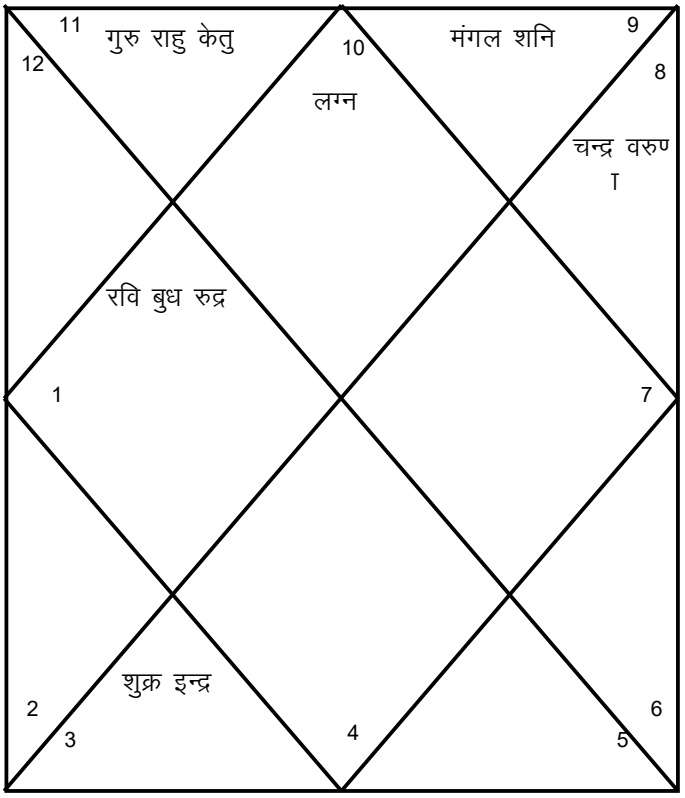

खवेदांश — शुभ फल

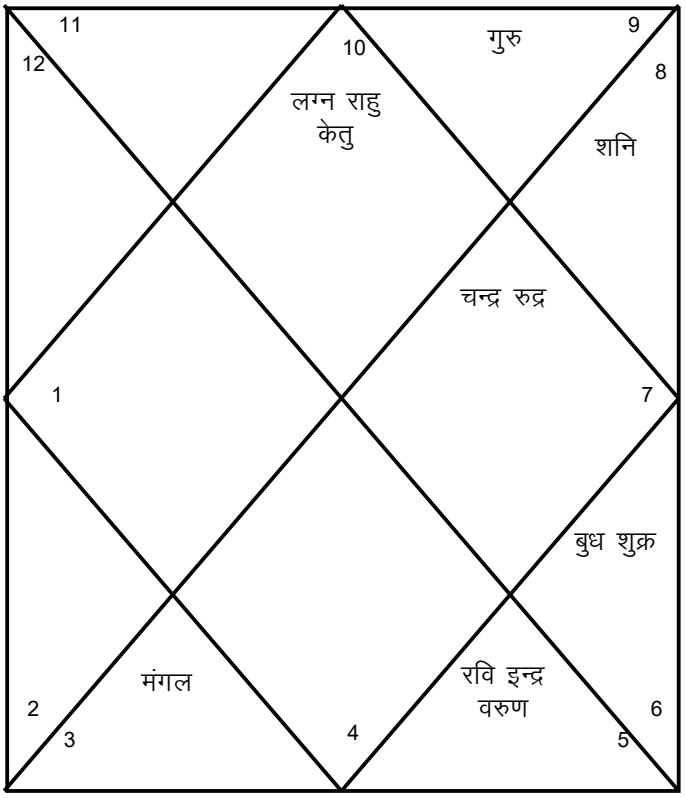

अक्षवेदांश — सार्विक कुशल

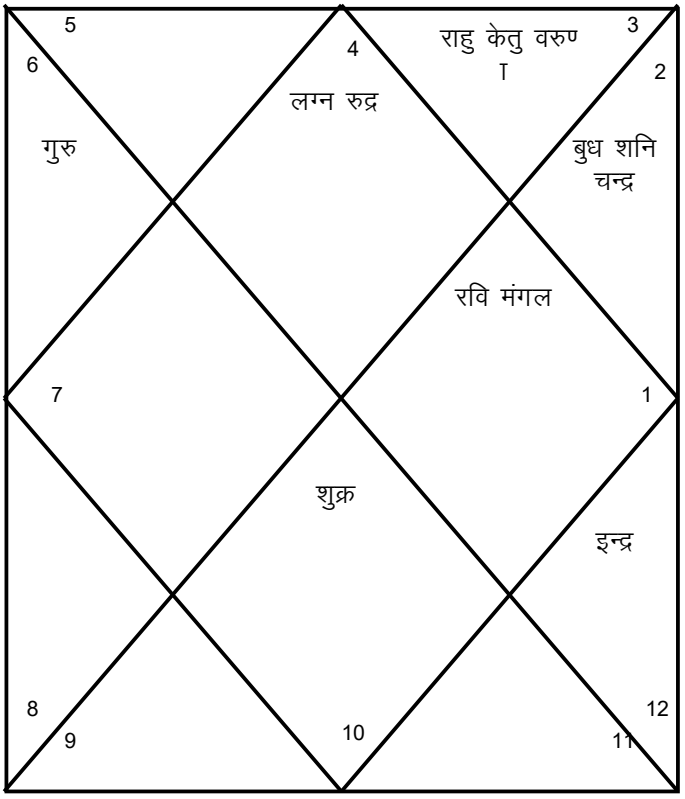

षष्टि अंश — सार्विक कुशल

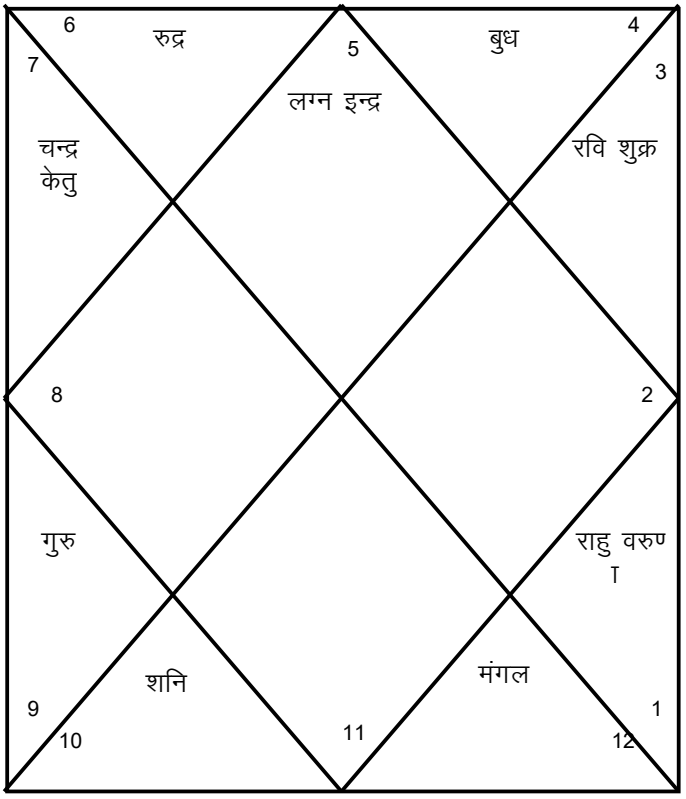

भाव सारिणी

भाव	भाव आरंभ		भाव मध्य	
1	मीन	05:02:22	मीन	20:56:45
2	मेष	05:02:22	मेष	19:07:59
3	वृषभ	03:13:35	वृषभ	17:19:12
4	मिथुन	01:24:49	मिथुन	15:30:26
5	कर्क	01:24:49	कर्क	17:19:12
6	सिंह	03:13:35	सिंह	19:07:59
7	कन्या	05:02:22	कन्या	20:56:45
8	तुला	05:02:22	तुला	19:07:59
9	वृश्चिक	03:13:35	वृश्चिक	17:19:12
10	धनु	01:24:49	धनु	15:30:26
11	मकर	01:24:49	मकर	17:19:12
12	कुम्भ	03:13:35	कुम्भ	19:07:59

भाव चलित चक्र

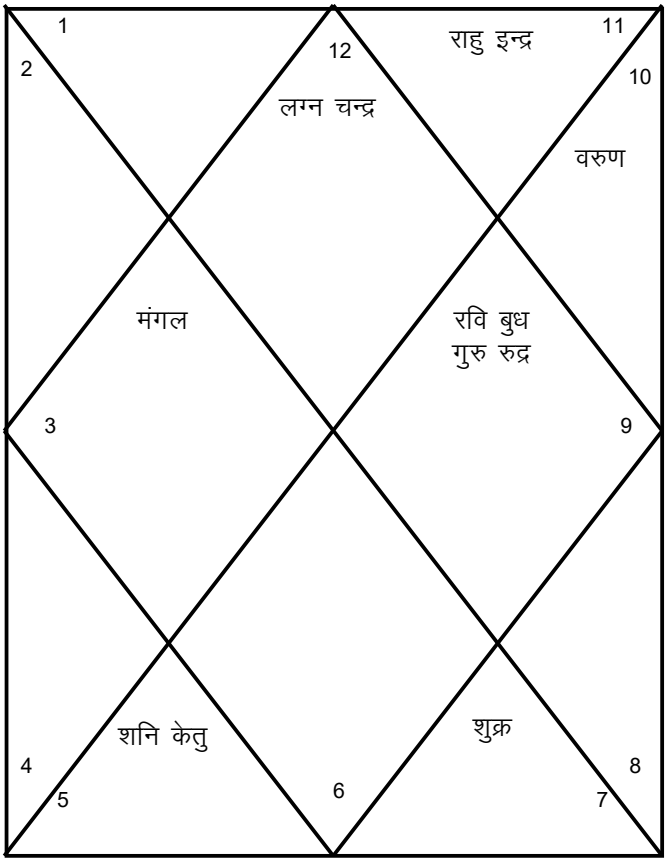

चन्द्र कुन्डली

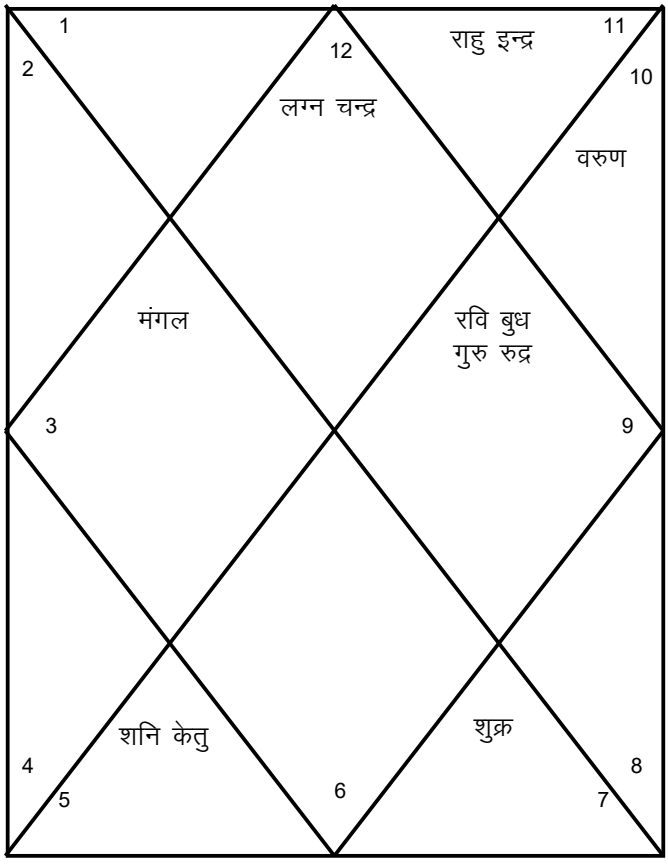

सूर्य सम्बन्धित उपग्रह

उपग्रह	स्वामी	राशी	डिग्री	नक्षत्र	चरण
धूम	मंगल	मेष	16:22:39	भरणी	1
व्यातिपात	राहु	मीन	13:37:21	उत्तर भाद्रपद	4
परिवेश	चन्द्र	कन्या	13:37:21	हस्त	2
इन्द्रचाप	शुक्र	तुला	16:22:39	स्वाति	3
उपकेतू	केतु	वृश्चिक	03:02:39	विशाखा	4
भूकम्प		कुम्भ	23:02:39	पूर्व भाद्रपद	1
उल्का		मेष	03:02:39	अश्विनी	1
ब्रह्मदन्ड		मिथुन	09:42:39	अरिद्रा	1
ध्वजा		सिंह	29:42:39	उत्तरा	1

वार आधारित उपग्रह (पाराशर)

उपग्रह	राशी	डिग्री	स्वामी	नक्षत्र	चरण
कालबेला	मीन	01:41:60	गुरु	पूर्व भाद्रपद	4
परिधि	मीन	29:04:40	गुरु	रेवती	4
मृत्यु	मेष	23:56:44	मंगल	भरणी	4
अर्धप्रहर	धनु	02:37:11	गुरु	मूला	1
यमकन्टक	धनु	20:39:00	गुरु	पूर्वाषाढ़ा	3
कोदन्ड	मकर	11:04:31	शनि	श्रवण	1
गुलिका	कुम्भ	04:51:04	शनि	धनिष्ठा	4
मन्दी	कुम्भ	24:26:35	शनि	पूर्व भाद्रपद	2

वार आधारित उपग्रह (कालीदास)

उपग्रह	राशी	डिग्री	स्वामी	नक्षत्र	चरण
कालबेला	मीन	29:04:40	गुरु	रेवती	4
परिधि	मेष	23:56:44	मंगल	भरणी	4
मृत्यु	धनु	02:37:11	गुरु	मूला	1
अर्धप्रहर	धनु	20:39:00	गुरु	पूर्वाषाढ़ा	3
यमकन्टक	मकर	11:04:31	शनि	श्रवण	1
कोदन्ड	कुम्भ	04:51:04	शनि	धनिष्ठा	4
गुलिका	मीन	01:41:60	गुरु	पूर्व भाद्रपद	4
मन्दी	कुम्भ	24:26:35	शनि	पूर्व भाद्रपद	2

भिन्न अष्टक वर्ग

शनि

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I
शनि	-	-	O	-	-	-	O	-	O	O	-	-
गुरु	O	O	-	-	-	-	O	O	-	-	-	-
मंगल	O	O	-	-	O	-	O	O	-	-	-	O
रवि	-	-	O	O	-	O	O	-	O	O	-	O
शुक्र	-	-	-	-	O	O	-	-	-	-	-	O
बुध	-	O	-	O	O	O	O	O	-	-	-	-
चन्द्र	-	O	-	-	O	-	-	-	-	O	-	-
लग्न	-	O	O	-	O	-	-	-	O	O	-	O
कुल	2	5	3	2	5	3	5	3	3	4	0	4

गुरु

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I
शनि	-	-	-	O	-	-	O	-	O	O	-	-
गुरु	-	-	O	O	-	O	O	-	O	O	O	O
मंगल	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O	-	O
रवि	-	-	O	O	O	O	O	-	O	O	O	O
शुक्र	-	-	O	O	O	-	-	O	-	-	O	O
बुध	O	O	-	-	O	O	O	-	O	O	-	O
चन्द्र	O	-	-	O	-	O	-	O	-	O	-	-
लग्न	O	-	O	O	O	O	-	O	O	O	-	O
कुल	4	1	5	7	4	6	4	3	6	7	3	6

मंगल

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I
शनि	O	O	O	-	O	-	-	O	-	-	O	O
गुरु	-	O	-	-	-	O	O	O	-	-	-	-
मंगल	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O	-	O
रवि	O	O	-	-	-	O	O	-	-	-	O	-
शुक्र	-	O	-	-	O	O	-	-	-	-	-	O
बुध	O	O	-	-	-	-	O	-	-	-	O	-
चन्द्र	-	O	-	-	O	-	-	-	-	O	-	-
लग्न	-	O	-	-	O	-	-	-	O	O	-	O
कुल	4	7	2	1	4	4	3	2	2	3	3	4

रवि

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I
शनि	O	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O
गुरु	O	O	-	-	O	-	O	-	-	-	-	-
मंगल	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O	O	O
रवि	-	-	O	O	O	O	O	-	O	O	-	O
शुक्र	O	-	-	-	-	O	-	-	-	-	-	O
बुध	O	O	-	-	O	O	O	O	-	-	O	-
चन्द्र	-	O	-	-	O	-	-	-	O	O	-	-
लग्न	-	O	O	-	O	-	-	-	O	O	O	-
कुल	5	5	4	2	6	5	3	2	4	4	4	4

भिन्न अष्टक वर्ग

शुक्र

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I
शनि	O	O	O	-	-	-	O	O	O	-	-	O
गुरु	O	-	-	O	O	O	O	-	-	-	-	-
मंगल	O	O	-	-	O	-	O	O	-	-	O	-
रवि	-	-	-	O	-	-	O	O	-	-	-	-
शुक्र	-	O	O	O	O	-	O	O	O	O	O	-
बुध	O	O	-	-	O	-	O	-	-	-	O	-
चन्द्र	O	O	O	O	-	-	O	O	-	O	O	O
लग्न	O	O	O	O	-	-	O	O	-	O	-	O
कुल	6	6	4	5	4	1	8	6	2	3	4	3

बुध

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I
शनि	O	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O
गुरु	-	O	-	O	-	-	O	O	-	-	-	-
मंगल	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O	O	O
रवि	O	O	-	-	O	-	O	O	-	-	-	-
शुक्र	-	O	O	-	O	-	O	O	O	O	O	-
बुध	O	O	-	-	O	O	O	O	O	-	O	-
चन्द्र	O	-	O	-	O	-	O	-	O	O	-	-
लग्न	O	-	O	-	O	-	O	-	O	O	-	O
कुल	6	5	5	2	6	3	6	5	5	4	4	3

चन्द्र

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I
शनि	-	-	O	-	-	-	O	-	O	O	-	-
गुरु	-	-	O	O	-	O	O	O	O	-	-	O
मंगल	O	-	-	O	O	-	O	O	-	-	O	O
रवि	-	O	O	O	-	O	O	-	-	-	O	-
शुक्र	O	-	O	O	O	-	-	-	O	O	O	-
बुध	O	-	O	O	-	O	O	-	O	-	O	O
चन्द्र	-	O	-	-	O	O	-	-	O	O	-	O
लग्न	-	O	-	-	O	-	-	-	O	O	-	-
कुल	3	3	5	5	4	4	5	2	6	4	4	4

लग्न

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I
शनि	-	O	O	-	O	-	O	O	-	O	-	-
गुरु	O	O	O	-	O	O	O	-	O	O	-	O
मंगल	O	-	O	-	O	-	-	O	-	-	-	O
रवि	-	O	-	-	-	O	O	O	-	-	O	O
शुक्र	-	O	O	-	-	-	O	O	O	O	O	-
बुध	-	O	-	O	-	O	O	-	O	O	-	O
चन्द्र	-	O	-	-	O	-	-	-	O	O	O	-
लग्न	-	O	-	-	O	-	-	-	O	O	-	-
कुल	2	7	4	1	5	3	5	4	5	6	3	4

अष्टकवर्ग (शोधनपूर्व)

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
रवि	5	5	4	2	6	5	3	2	4	4	4	4	**48**
चन्द्र	3	3	5	5	4	4	5	2	6	4	4	4	**49**
मंगल	4	7	2	1	4	4	3	2	2	3	3	4	**39**
बुध	6	5	5	2	6	3	6	5	5	4	4	3	**54**
गुरु	4	1	5	7	4	6	4	3	6	7	3	6	**56**
शुक्र	6	6	4	5	4	1	8	6	2	3	4	3	**52**
शनि	2	5	3	2	5	3	5	3	3	4	0	4	**39**
कुल	**30**	**32**	**28**	**24**	**33**	**26**	**34**	**23**	**28**	**29**	**22**	**28**	**337**
राहु	2	5	4	7	2	3	3	3	5	2	4	4	**44**
लग्न	2	7	4	1	5	3	5	4	5	6	3	4	**49**

त्रिकोण शोधन के पश्चात

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रवि	1	1	1	0	2	1	0	0	0	0	1	2
चन्द्र	0	0	1	3	1	1	1	0	3	1	0	2
मंगल	2	4	0	0	2	1	1	1	0	0	1	3
बुध	1	2	1	0	1	0	2	3	0	1	0	1
गुरु	0	0	2	4	0	5	1	0	2	6	0	3
शुक्र	4	5	0	2	2	0	4	3	0	2	0	0
शनि	0	2	3	0	3	0	5	1	1	1	0	2

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रवि	1	1	1	0	2	0	0	0	0	0	1	2
चन्द्र	0	0	1	3	1	0	1	0	3	1	0	2
मंगल	1	1	0	0	2	1	1	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	0	2	2	0	1	0	1
गुरु	0	0	2	4	0	3	1	0	2	6	0	3
शुक्र	1	4	0	2	2	0	4	0	0	2	0	0
शनि	0	0	3	0	3	0	5	1	1	1	0	2

शोध्य पिन्ड

पिन्ड	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रह	28	90	32	32	78	38	104
राशी	80	93	96	65	138	113	135
शोध्य	**108**	**183**	**128**	**97**	**216**	**151**	**239**

नैसर्गिक

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि	————	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	मित्र	————	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	सम	सम
शुक्र	शत्रु	मित्र	————	सम	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	सम	————	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	————	सम	मित्र	मित्र	सम
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	————	शत्रु	मित्र	शत्रु
चन्द्र	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	————	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	————	शत्रु
केतु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	————

तात्कालिक

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि	————	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	————	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	————	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	शत्रु	शत्रु	————	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	————	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	————	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चन्द्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	————	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	————	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	————

पन्चधा

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि	————	शत्रु	सम	सम	सम	परमशत्रु	परममित्र	सम	परमशत्रु
बुध	सम	————	परममित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	परममित्र	————	शत्रु	मित्र	परममित्र	परमशत्रु	सम	परममित्र
मंगल	सम	परमशत्रु	शत्रु	————	सम	मित्र	परममित्र	परमशत्रु	परममित्र
गुरु	सम	परमशत्रु	सम	सम	————	शत्रु	परममित्र	परममित्र	शत्रु
शनि	परमशत्रु	सम	परममित्र	सम	शत्रु	————	परमशत्रु	सम	परमशत्रु
चन्द्र	परममित्र	परममित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	————	सम	परमशत्रु
राहु	सम	मित्र	सम	परमशत्रु	परममित्र	सम	सम	————	परमशत्रु
केतु	परमशत्रु	शत्रु	परममित्र	परममित्र	शत्रु	परमशत्रु	परमशत्रु	परमशत्रु	————

सुदर्शन चक्र

02/14/26/38/50/62/74/86/98/110 01/13/25/37/49/61/73/85/97/109 12/24/36/48/60/72/84/96/108/120

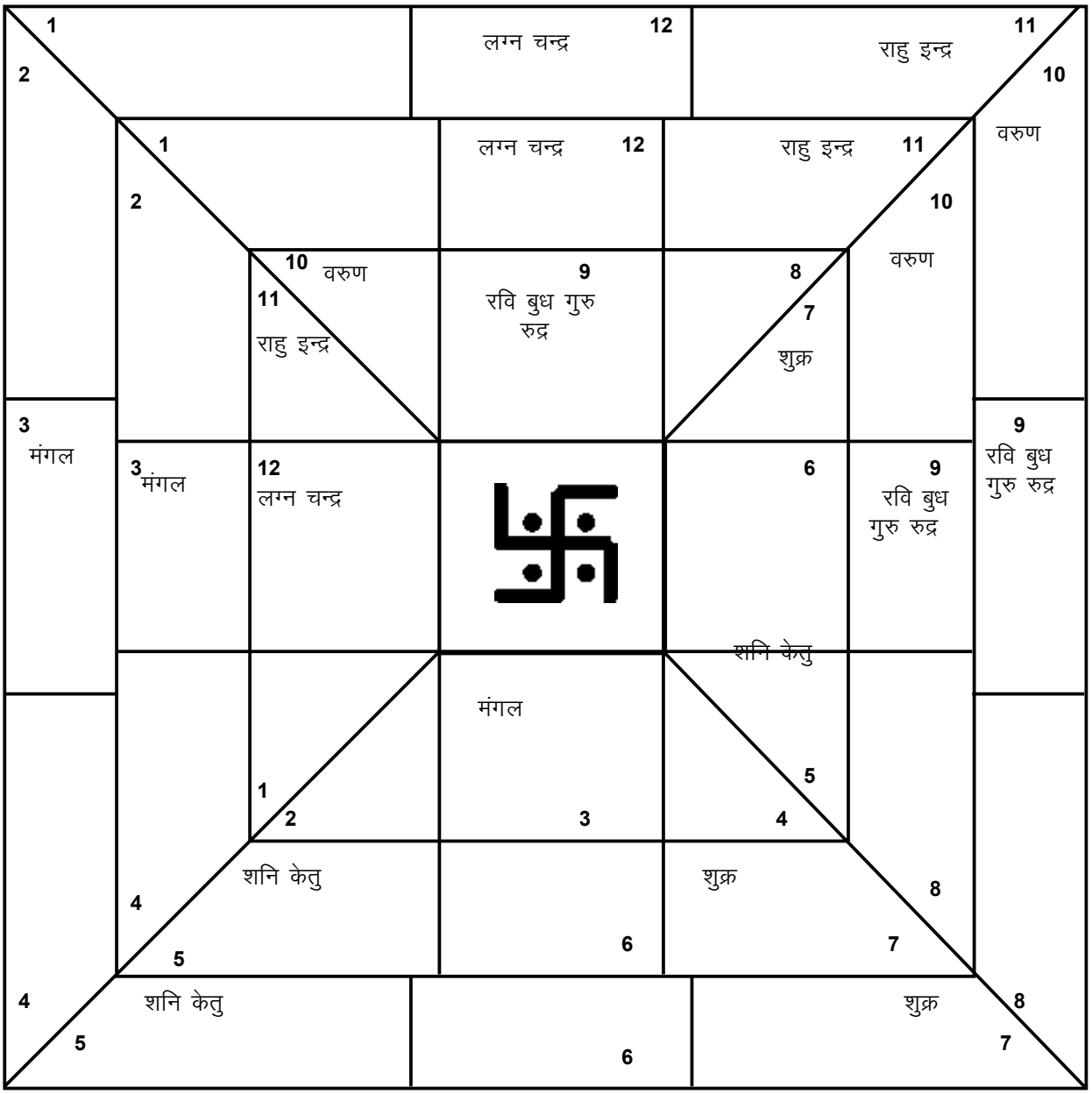

06/18/30/42/54/66/78/90/102 07/19/31/43/55/67/79/91/103 08/20/32/44/56/68/92/104

सुदर्शन चक्र में जातक का भविष्य लग्न के अलावा सूर्य व चन्द्र से भी जांचा जाता है. इसके द्वारा एक निगाह में लग्न सूर्य और चन्द्र से ग्रहों स्थिति प्राप्त की जा सकती है.

शुभ अशुभ घटनायें व उनके घटने का सही समय सुदर्शन चक्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है

कारक ग्रह

	स्थिर कारक	सप्तकारक	अष्टकारक
रवि	पिता	कलत्र	कलत्र
बुध	बुद्धि	ज्ञाति	ज्ञाती
शुक्र	जीवनसाथी	आमात्य	भ्रातृ
मंगल	विक्रम	मातृ	पितृ
गुरु	धनसम्पदा	पुत्र	पुत्र
शनि	परमायु	भ्रातृ	मातृ
चन्द्र	माता	आत्म	आत्मा
राहु	अभिलाषा	————	अमात्य
केतु	मोक्ष	————	————

ग्रहावस्था

	अवस्था 3	अवस्था 5	अवस्था 6	अवस्था 9	अवस्था 10	अवस्था 12
रवि	स्वप्न	बाल	मुदित	शान्त	हर्षित	सभास्थ
बुध	सुप्त	बाल	मुदित	दुखित	शान्त	आगम
शुक्र	जाग्रत	वृद्ध	मुदित	स्वस्थ	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा
मंगल	स्वप्न	कुमार	————	दीन	शान्त	आगमन
गुरु	जाग्रत	कुमार	क्षुदित	स्वस्थ	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा
शनि	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुखित	पीड़ित	भोजन
चन्द्र	स्वप्न	बाल	मुदित	शान्त	हर्षित	भोजन
राहु	जाग्रत	कुमार	मुदित	स्वस्थ	स्वस्थ	उपवेशन
केतु	सुप्त	कुमार	क्षुदित	दुखित	पीड़ित	उपवेशन

नव तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
27	01	02	03	04	05	06	07	08
09	10	11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24	25	26

ग्रह संयोग एवं दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु	इन्द्र	वरुण	रुद्र
लग्न	108	107	149 QNC	280	105	216 BQT	7	44 SSQ	224 SQQ	30 SSX	55	106
रवि		1 CNJ	41	172	3 CNJ	108	115	64	116	78	53	2 CNJ
बुध			42 SSQ	173	2 CNJ	109	114	63 SXT	117 TRN	77	52	1 CNJ
शुक्र				131	44 SSQ	68	155	105	75 QNT	119 TRN	94	42 SSQ
मंगल					175	64	287 QNT	236	56	250	225 SQQ	174
गुरु						112	111	61 SXT	119 TRN	75 QNT	50	1 CNJ
शनि							223 SQQ	172	8	186	161	110
चन्द्र								51	231	37	62 SXT	113
राहु									180 OPP	14	11	62 SXT
केतु										194	169	118 TRN
इन्द्र											25	76
वरुण												51

Index of Words:

CNJ: Conjunction TRN: Trine SSQ: Semi Square QNT: Quintile

OPP: Opposition SXT: Sextile QNC: Quincunx BQT: Bi Quintile

SQU: Square SQQ: Sesquiquadrate SSX: Semi Sextile

ग्रह दृष्टि विचार के लिये 3 डिग्री 20 मिनिट का प्रभाव क्षेत्र लिया गया है।

पाराशरी दृष्टि

ग्रह	द्वारा दृष्ट	ग्रह	द्वारा दृष्ट
रवि	मंगल	शुक्र	शनि
चन्द्र	––	शनि	गुरु राहु
मंगल	रवि बुध गुरु	राहु	शनि केतु
बुध	मंगल	केतु	गुरु राहु
गुरु	मंगल	लग्न	––

शनि साड़े साती

शनि साड़े साती	राशी	प्रवेश	निर्गम	मूर्ति
अष्टमाशनि	तुला	15-11-2011	15-05-2012	लोहा
अष्टमाशनि	तुला	04-08-2012	02-11-2014	रजत
साड़ेसाती	कुम्भ	29-04-2022	12-07-2022	स्वर्ण
साड़ेसाती	कुम्भ	18-01-2023	29-03-2025	रजत
जन्मशनि	मीन	30-03-2025	02-06-2027	स्वर्ण
जन्मशनि	मीन	20-10-2027	23-02-2028	लोहा
साड़ेसाती	मेष	03-06-2027	19-10-2027	रजत
साड़ेसाती	मेष	24-02-2028	07-08-2029	ताँबा
साड़ेसाती	मेष	06-10-2029	16-04-2030	लोहा
कन्टकशनि	मिथुन	31-05-2032	12-07-2034	लोहा
अष्टमाशनि	तुला	28-01-2041	05-02-2041	रजत
अष्टमाशनि	तुला	26-09-2041	11-12-2043	स्वर्ण
अष्टमाशनि	तुला	23-06-2044	29-08-2044	रजत
साड़ेसाती	कुम्भ	25-02-2052	14-05-2054	ताँबा
साड़ेसाती	कुम्भ	02-09-2054	05-02-2055	रजत
जन्मशनि	मीन	15-05-2054	01-09-2054	स्वर्ण
जन्मशनि	मीन	06-02-2055	06-04-2057	ताँबा
साड़ेसाती	मेष	07-04-2057	27-05-2059	ताँबा
कन्टकशनि	मिथुन	11-07-2061	13-02-2062	रजत
कन्टकशनि	मिथुन	07-03-2062	23-08-2063	ताँबा
कन्टकशनि	मिथुन	06-02-2064	09-05-2064	रजत
अष्टमाशनि	तुला	05-11-2070	05-02-2073	रजत
अष्टमाशनि	तुला	31-03-2073	23-10-2073	रजत
साड़ेसाती	कुम्भ	12-04-2081	02-08-2081	ताँबा
साड़ेसाती	कुम्भ	07-01-2082	19-03-2084	स्वर्ण
जन्मशनि	मीन	20-03-2084	21-05-2086	स्वर्ण
जन्मशनि	मीन	10-11-2086	07-02-2087	रजत
साड़ेसाती	मेष	22-05-2086	09-11-2086	स्वर्ण
साड़ेसाती	मेष	08-02-2087	17-07-2088	लोहा
अष्टमाशनि	तुला	26-12-2099	17-03-2100	ताँबा

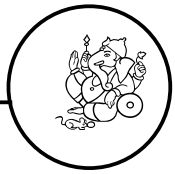

षड बल

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र
उच्च बल	17.68	33.67	51.57	15.73	9.62	38.20	48.21
सप्तवर्गीय बल	69.38	48.75	118.12	46.88	101.25	50.62	101.25
दिन–रात्रि बल	30	15	0	15	15	30	30
केन्द्रादि बल	60.00	60.00	30.00	60.00	60.00	15.00	60.00
द्रेक्कान बल	15.00	0.00	15.00	0.00	15.00	15.00	15.00
स्थान बल	192.06	157.42	214.69	137.61	200.87	148.82	254.46
दिग बल	55.85	24.35	17.74	1.56	25.07	47.88	34.04
नतोन्नत बल	57.44	60.00	57.44	2.56	57.44	2.56	2.56
पक्ष बल	21.81	38.19	38.19	21.81	38.19	21.81	38.19
त्रिभाग बल	60.00	0.00	0.00	0.00	60.00	0.00	0.00
वर्ष बल	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	15.00	0.00
मास बल	30.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
वार बल	0.00	45.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
होरा बल	60.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
अयन बल	1.00	59.32	14.58	58.41	0.04	22.86	22.80
युद्ध बल	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
काल बल	230.25	202.51	110.21	82.78	155.67	62.23	63.55
चेष्टा बल	1	7.69	42.51	59.64	10.43	38.72	38.19
नैसर्गिक बल	60	25.71	42.86	17.14	34.29	8.57	51.43
द्रिक बल	-11.89	-12.24	-9.64	18.79	-13.05	13.58	0.08
कुल षडबल	527.27	405.44	418.37	317.52	413.28	319.80	441.75
रुप में षडबल	8.79	6.76	6.97	5.29	6.89	5.33	7.36
निम्न का अंश	1.35	0.97	1.27	1.06	1.06	1.07	1.23
स्थान बल अंश	1.16	0.95	1.61	1.43	1.22	1.55	1.91
दिग बल अंश	1.6	0.7	0.35	0.05	0.72	1.6	0.68
काल बल अंश	2.06	1.81	1.1	1.24	1.39	0.93	0.64
चेष्टा बल अंश	0.02	0.15	1.42	1.49	0.21	0.97	1.27
अयन बल अंश	0.03	1.98	0.36	2.92	0	1.14	0.57
स्थिति	1	5	3	7	4	6	2
ईष्ट फल	4.20	16.09	46.82	30.63	10.02	38.46	42.91
कष्ट फल	49.97	37.11	12.14	3.99	49.97	21.54	16.03

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशी	डिग्री	नक्षत्र	र.न.उ. स्वामी	दिशा	अवस्था
लग्न	मीन	21:02:30	रेवती	गुरु––बुध––शुक्र		––
रवि	धनु	03:08:24	मूला	गुरु––केतु––रवि	मार्गी	––
बुध	धनु	04:04:53	मूला	गुरु––केतु––चन्द्र	मार्गी	––
शुक्र	तुला	22:23:06	विशाखा	शुक्र––गुरु––शनि	मार्गी	स्वगृह
मंगल	मिथुन	10:54:46	अरिद्रा	बुध––राहु––शनि	वक्री	––
गुरु	धनु	06:14:16	मूला	गुरु––केतु––राहु	मार्गी	मूलत्रिकोण
शनि	सिंह	14:41:45	पूर्वा	रवि––शुक्र––शुक्र	मार्गी	––
चन्द्र	मीन	27:43:25	रेवती	गुरु––बुध––गुरु	मार्गी	––
राहु	कुम्भ	07:08:31	शतभिषा	शनि––राहु––राहु	वक्री	––
केतु	सिंह	07:08:31	मघा	रवि––केतु––राहु	वक्री	––
इन्द्र	कुम्भ	21:09:56	पूर्व भाद्रपद	शनि––गुरु––गुरु	मार्गी	––
वरुण	मकर	26:01:31	धनिष्ठा	शनि––मंगल––रा	मार्गी	––
रुद्र	धनु	04:47:59	मूला	गुरु––केतु––मंगल	मार्गी	––

पार्स फॉरच्युना: कर्क 15:37:31

कृष्णमूर्ति गृह कस्प

गृह	गृह कस्प		र.न.उ. स्वामी	भाव अवधि		
I.	मीन	20:36:35	गु––बु––शु	350:36:35	–	25:39:
II.	मेष	25:39:38	मं––शु––बु	25:39:	–	52:01:
III.	वृषभ	22:01:31	शु––चं––शु	52:01:	–	75:19:
IV.	मिथुन	15:19:25	बु––र––शु	75:19:	–	99:54:
V.	कर्क	09:54:37	चं––श––शु	99:54:	–	130:21:26
VI.	सिंह	10:21:26	सू––के––श	130:21:26	–	170:36:35
VII.	कन्या	20:36:35	बु––चं––शु	170:36:35	–	205:39:38
VIII.	तुला	25:39:38	शु––गु––बु	205:39:38	–	232:01:31
IX.	वृश्चिक	22:01:31	मं––बु––सू	232:01:31	–	255:19:25
X.	धनु	15:19:25	गु––शु––शु	255:19:25	–	279:54:37
XI.	मकर	09:54:37	श––सू––शु	279:54:37	–	310:21:26
XII.	कुम्भ	10:21:26	श––र––गु	310:21:26	–	350 36:35

भाव ग्रह कारक

भाव कारक ग्रह बल

गृह	महाबली	बली	सामान्य	क्षीण
I.	––	––	गुरु चन्द्र	शुक्र
II.	––	––	मंगल	––
III.	––	––	शुक्र मंगल	शनि
IV.	––	––	बुध	चन्द्र
V.	––	––	चन्द्र केतु	––
VI.	––	––	रवि शनि	––
VII.	––	––	बुध शुक्र	शनि चन्द्र
VIII.	––	––	शुक्र	शनि
IX.	––	––	रवि बुध मंगल गुरु	शुक्र चन्द्र
X.	––	––	गुरु	शुक्र
XI.	––	––	शनि राहु	––
XII.	––	––	शनि	––

भावों के कारक ग्रह

गृह	क.	ख.	ग.	घ.
I.	गुरु	चन्द्र	शुक्र	––
II.	मंगल	––	––	––
III.	शुक्र	मंगल	शनि	––
IV.	बुध	––	चन्द्र	––
V.	चन्द्र	केतु	––	––
VI.	रवि	शनि	––	––
VII.	बुध	शुक्र	चन्द्र	शनि
VIII.	शुक्र	––	शनि	––
IX.	मंगल	रवि बुध गुरु	––	शुक्र चन्द्र
X.	गुरु	––	शुक्र	––
XI.	शनि	राहु	––	––
XII.	शनि	––	––	––

क्रमः क. कस्प राशी स्वामी, ख. भाव स्थित ग्रह, ग. कस्प स्वामी नक्षत्र में ग्रह, घ. भाव स्थित ग्रहों के नक्षत्र में ग्रह.

ग्रहों के कारक भाव

ग्रह	महाबली	बली	सामान्य	क्षीण
रवि	-	-	6 9	-
बुध	-	-	4 7 9	-
शुक्र	-	-	3 7 8	1 9 10
मंगल	-	-	2 3 9	-
गुरु	-	-	1 9 10	-
शनि	-	-	6 11 12	3 7 8
चन्द्र	-	-	1 5	4 7 9
राहु	-	-	11	-
केतु	-	-	5	-

कारक उप पति

गृह	उप पति	महाबली	बली	सामान्य	क्षीण
I.	शुक्र	-	-	3 7 8	1 9 10
II.	बुध	-	-	4 7 9	-
III.	शुक्र	-	-	3 7 8	1 9 10
IV.	शुक्र	-	-	3 7 8	1 9 10
V.	शुक्र	-	-	3 7 8	1 9 10
VI.	शनि	-	-	6 11 12	3 7 8
VII.	शुक्र	-	-	3 7 8	1 9 10
VIII.	बुध	-	-	4 7 9	-
IX.	रवि	-	-	6 9	-
X.	शुक्र	-	-	3 7 8	1 9 10
XI.	शुक्र	-	-	3 7 8	1 9 10
XII.	गुरु	-	-	1 9 10	-

कृष्णमूर्ति लग्न कुन्डली

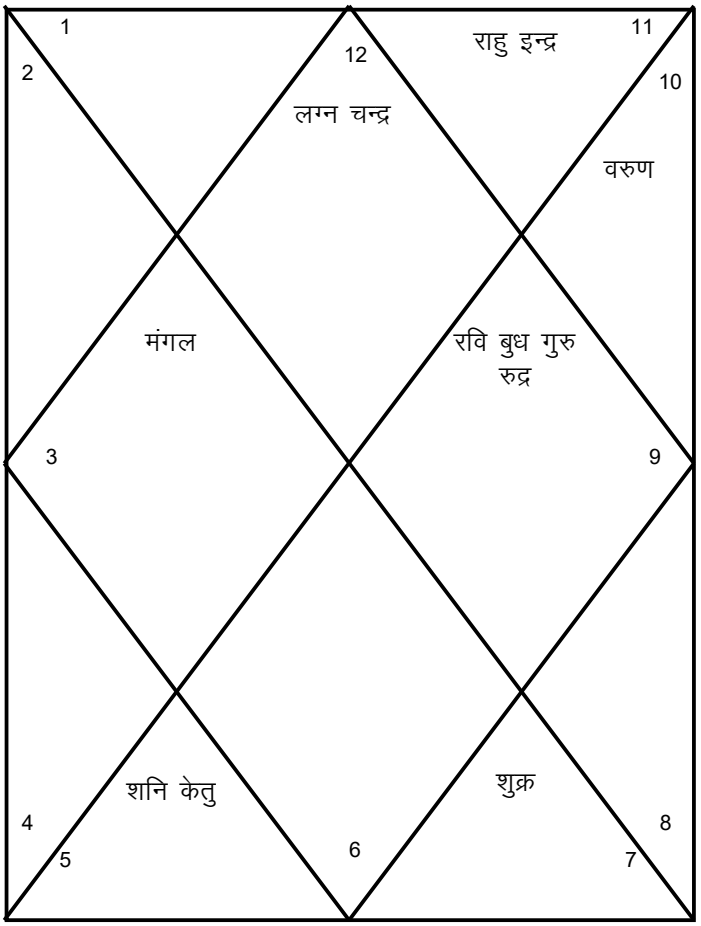

कृष्णमूर्ति भाव कुन्डली

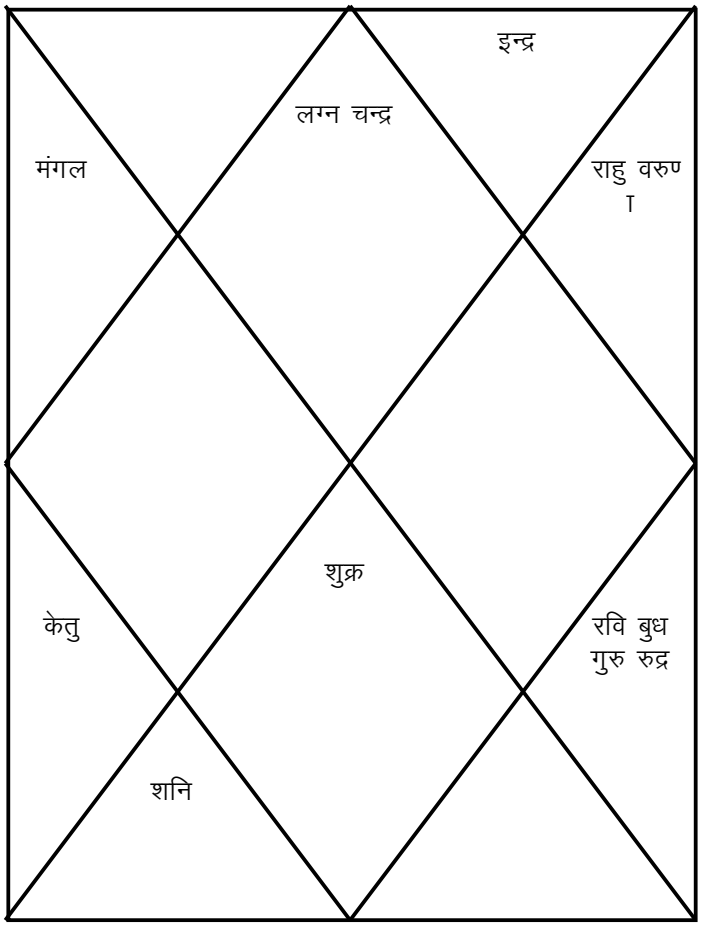

स्वामी ग्रह	
दिन स्वामी	बुध
लग्न राशी स्वामी	गुरु
लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न सब स्वामी	शुक्र
चन्द्र राशी स्वामी	गुरु
चन्द्र नक्षत्र स्वामी	बुध
चन्द्र सब स्वामी	गुरु

पार्स फॉरच्युना	कर्क 15:37:31
के. पी. अयनांश	23:52:19
जन्म समय विंशोत्तरी	बुधः 2 वर्ष 10 माह 24 दिवस

जैमिनी लग्न एवं स्फुट

लग्न		राशी
जन्म लग्न	:	मीन
द्रेष्काण लग्न (पारंपारिक)	:	वृश्चिक
द्रेष्काण लग्न (परिवृत्ति त्रय)	:	मीन
द्रेष्काण लग्न (सोमनाथ)	:	तुला
नवांश लग्न (पारंपरिक)	:	मकर
नवांश लग्न (कृष्ण मिश्र)	:	धनु
अरुढ लग्न (पारंपरिक)	:	कन्या
अरुढ लग्न (सशर्त)	:	मिथुन
उपपद लग्न (पारंपरिक)	:	कुम्भ
उपपद लग्न (सशर्त)	:	वृश्चिक
स्वांश लग्न	:	मकर
कारकांश लग्न	:	मीन
पाक लग्न	:	धनु
होरा लग्न (पारंपरिक)	:	सिंह
होरा लग्न (वृद्धिकारक)	:	मीन
होरा लग्न (सव्यव)	:	वृश्चिक
भाव लग्न	:	वृषभ
घटिका लग्न	:	मेष
सपद घटिका लग्न	:	वृषभ
अयुर लग्न	:	वृषभ
वर्णद लग्न	:	धनु
श्री लग्न	:	मकर
इन्दु लग्न	:	कुम्भ
तारा लग्न	:	धनु
नक्षत्र लग्न	:	धनु
दिव्य लग्न	:	वृश्चिक
त्रिपवन लग्न	:	मीन
स्फुट योग लग्न	:	मिथुन

जैमिनी लग्न कुन्डलियां

जन्म लग्न

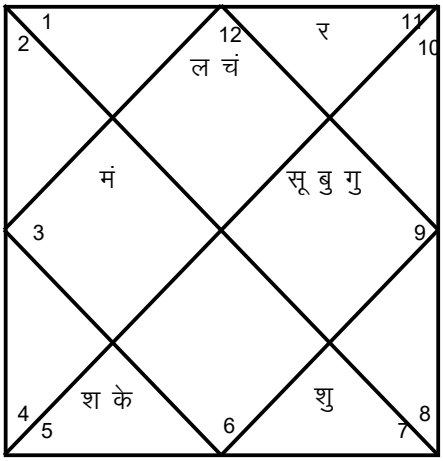

द्रेष्काण पारंपरिक

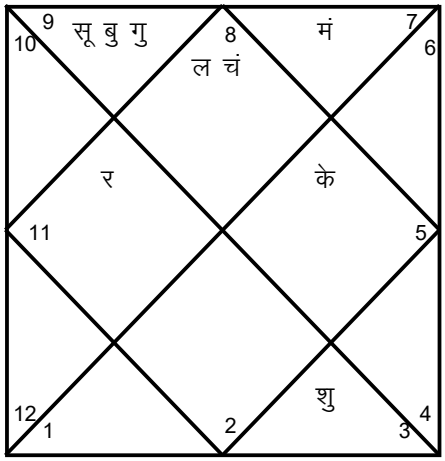

द्रेष्काण परिवृत्ति त्रय

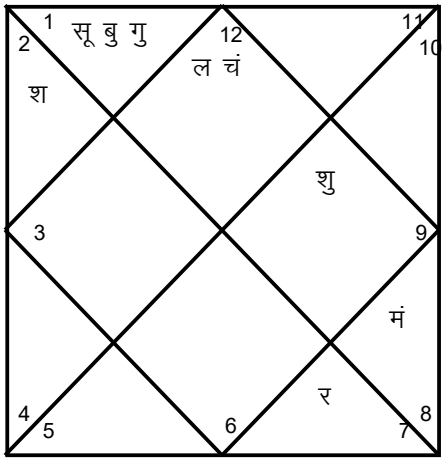

द्रेष्काण सोमनाथ

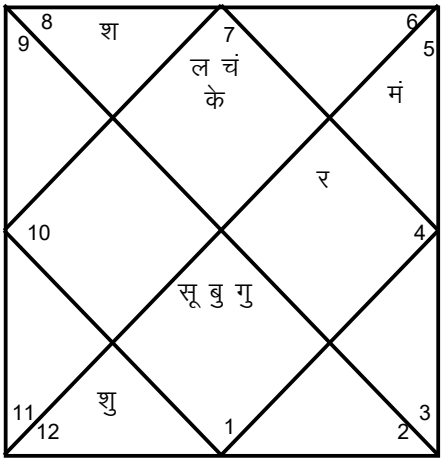

नवांश पारंपरिक

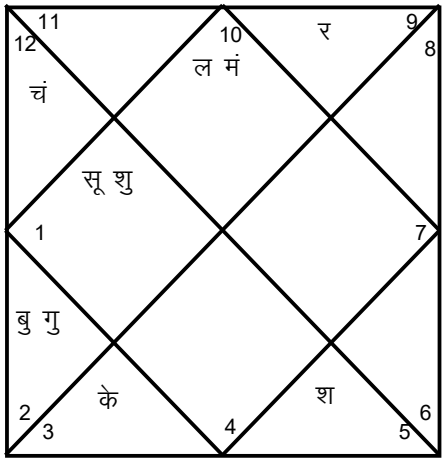

नवांश कृष्ण मिश्र

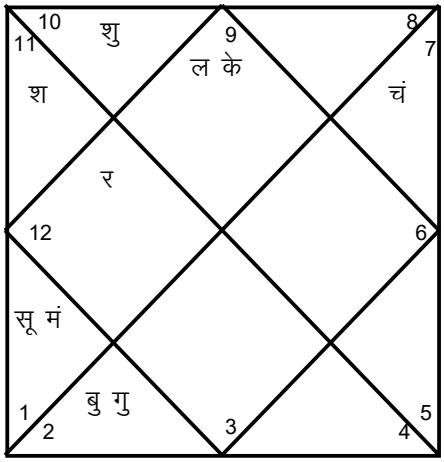

अरुढ लग्न (पारंपरिक)

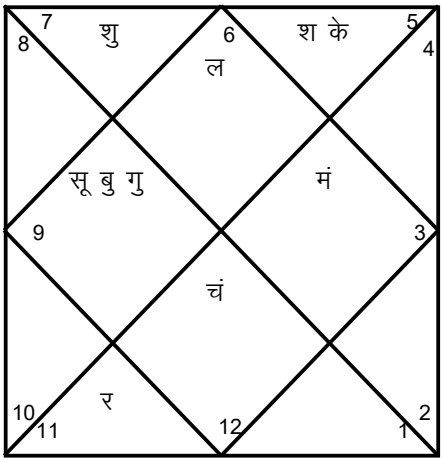

उपपद लग्न

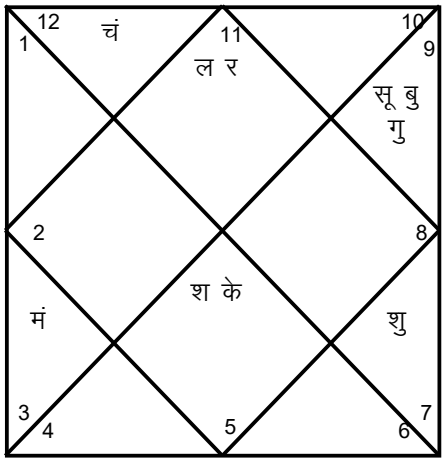

कारकांश लग्न

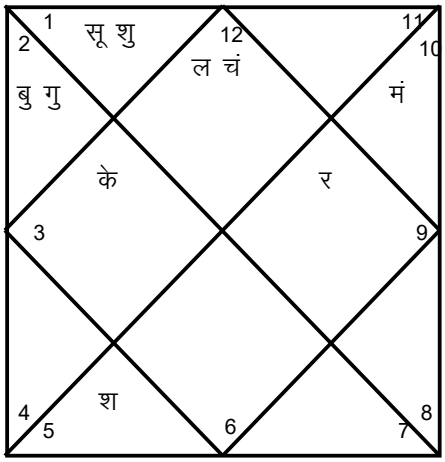

जैमिनी स्फुट

स्फुट नाम	स्फुट	
बीज स्फुट मुख्य	कुम्भ	09:49:40
बीज स्फुट उप––1	मीन	01:28:30
बीज स्फुट उप––2	कन्या	07:28:10
क्षेत्र स्फुट मुख्य	वृश्चिक	03:49:48
क्षेत्र स्फुट उप––1	कुम्भ	14:35:11
क्षेत्र स्फुट उप––2	वृश्चिक	11:23:11

जैमिनी कारक

ग्रह	अष्ट चर	सप्त चर	सप्त स्थिर	सप्त भाव
रवि	दारा	दारा	आत्म	ज्ञाति
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	अमात्य	मातृ दारा
शुक्र	भ्रातृ	अमात्य	दारा	भ्रातृ
मंगल	पितृ	मातृ	भ्रातृ	अमात्य
गुरु	अपात्य	अपात्य	अपात्य	आत्म
शनि	मातृ	भ्रातृ	ज्ञाति	
चन्द्र	आत्म	आत्म	मातृ	अपात्य
राहु	अमात्य			

जैमिनी दृष्टि

ग्रह	सम्मुख दृष्टि	पार्श्व दृष्टि
मेष	वृश्चिक	सिंह––कुम्भ
वृषभ	तुला –– शुक्र	कर्क––मकर
मिथुन –– मं	धनु –– रवि –– बुध –– गुरु	कन्या––मीन
कर्क	कुम्भ –– राहु	वृषभ––वृश्चिक
सिंह –– श –– के	मकर	मेष––तुला
कन्या	मीन –– लग्न –– चन्द्र	मिथुन––धनु
तुला –– शु	वृषभ	सिंह––कुम्भ
वृश्चिक	मेष	कर्क––मकर
धनु –– सू –– बु ––	मिथुन –– मंगल	कन्या––मीन
मकर	सिंह –– शनि –– केतु	वृषभ––वृश्चिक
कुम्भ –– र	कर्क	मेष––तुला
मीन –– ल –– चं	कन्या	मिथुन––धनु

विंशोत्तरी दशा (महादशा)

बुध	**17** वर्ष
से	28-12-1993
तक	28-12-2010
बुध	28-12-1993
केतु	25-05-1996
शुक्र	22-05-1997
रवि	22-03-2000
चन्द्र	26-01-2001
मंगल	27-06-2002
राहु	25-06-2003
गुरु	12-01-2006
शनि	18-04-2008

केतु	**7** वर्ष
से	28-12-2010
तक	28-12-2017
केतु	28-12-2010
शुक्र	26-05-2011
रवि	26-07-2012
चन्द्र	01-12-2012
मंगल	02-07-2013
राहु	28-11-2013
गुरु	16-12-2014
शनि	22-11-2015
बुध	01-01-2017

शुक्र	**20** वर्ष
से	28-12-2017
तक	28-12-2037
शुक्र	28-12-2017
रवि	29-04-2021
चन्द्र	29-04-2022
मंगल	28-12-2023
राहु	27-02-2025
गुरु	27-02-2028
शनि	29-10-2030
बुध	29-12-2033
केतु	28-10-2036

रवि	**6** वर्ष
से	28-12-2037
तक	28-12-2043
रवि	28-12-2037
चन्द्र	17-04-2038
मंगल	16-10-2038
राहु	21-02-2039
गुरु	16-01-2040
शनि	03-11-2040
बुध	16-10-2041
केतु	23-08-2042
शुक्र	28-12-2042

चन्द्र	**10** वर्ष
से	28-12-2043
तक	28-12-2053
चन्द्र	28-12-2043
मंगल	27-10-2044
राहु	29-05-2045
गुरु	27-11-2046
शनि	28-03-2048
बुध	27-10-2049
केतु	28-03-2051
शुक्र	27-10-2051
रवि	28-06-2053

मंगल	**7** वर्ष
से	28-12-2053
तक	28-12-2060
मंगल	28-12-2053
राहु	26-05-2054
गुरु	14-06-2055
शनि	19-05-2056
बुध	28-06-2057
केतु	25-06-2058
शुक्र	21-11-2058
रवि	21-01-2060
चन्द्र	28-05-2060

राहु	**18** वर्ष
से	28-12-2060
तक	28-12-2078
राहु	28-12-2060
गुरु	10-09-2063
शनि	03-02-2066
बुध	09-12-2068
केतु	28-06-2071
शुक्र	17-07-2072
रवि	17-07-2075
चन्द्र	09-06-2076
मंगल	09-12-2077

गुरु	**16** वर्ष
से	28-12-2078
तक	28-12-2094
गुरु	28-12-2078
शनि	15-02-2081
बुध	29-08-2083
केतु	04-12-2085
शुक्र	10-11-2086
रवि	11-07-2089
चन्द्र	30-04-2090
मंगल	29-08-2091
राहु	04-08-2092

शनि	**19** वर्ष
से	28-12-2094
तक	28-12-2113
शनि	28-12-2094
बुध	31-12-2097
केतु	10-09-2100
शुक्र	19-10-2101
रवि	19-12-2104
चन्द्र	01-12-2105
मंगल	02-07-2107
राहु	11-08-2108
गुरु	17-06-2111

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर

शुक्र	
से	28-12-2017
तक	29-04-2021
शुक्र	28-12-2017
रवि	19-07-2018
चन्द्र	18-09-2018
मंगल	28-12-2018
राहु	09-03-2019
गुरु	08-09-2019
शनि	17-02-2020
बुध	28-08-2020
केतु	17-02-2021

रवि	
से	29-04-2021
तक	29-04-2022
रवि	29-04-2021
चन्द्र	17-05-2021
मंगल	17-06-2021
राहु	08-07-2021
गुरु	01-09-2021
शनि	19-10-2021
बुध	16-12-2021
केतु	06-02-2022
शुक्र	27-02-2022

चन्द्र	
से	29-04-2022
तक	28-12-2023
चन्द्र	29-04-2022
मंगल	19-06-2022
राहु	24-07-2022
गुरु	23-10-2022
शनि	13-01-2023
बुध	19-04-2023
केतु	14-07-2023
शुक्र	19-08-2023
रवि	28-11-2023

मंगल	
से	28-12-2023
तक	27-02-2025
मंगल	28-12-2023
राहु	22-01-2024
गुरु	26-03-2024
शनि	22-05-2024
बुध	28-07-2024
केतु	27-09-2024
शुक्र	22-10-2024
रवि	01-01-2025
चन्द्र	22-01-2025

राहु	
से	27-02-2025
तक	27-02-2028
राहु	27-02-2025
गुरु	11-08-2025
शनि	04-01-2026
बुध	26-06-2026
केतु	28-11-2026
शुक्र	31-01-2027
रवि	02-08-2027
चन्द्र	26-09-2027
मंगल	26-12-2027

गुरु	
से	27-02-2028
तक	29-10-2030
गुरु	27-02-2028
शनि	06-07-2028
बुध	07-12-2028
केतु	24-04-2029
शुक्र	20-06-2029
रवि	29-11-2029
चन्द्र	17-01-2030
मंगल	08-04-2030
राहु	04-06-2030

शनि	
से	29-10-2030
तक	29-12-2033
शनि	29-10-2030
बुध	30-04-2031
केतु	11-10-2031
शुक्र	17-12-2031
रवि	27-06-2032
चन्द्र	24-08-2032
मंगल	28-11-2032
राहु	04-02-2033
गुरु	27-07-2033

बुध	
से	29-12-2033
तक	28-10-2036
बुध	29-12-2033
केतु	24-05-2034
शुक्र	24-07-2034
रवि	12-01-2035
चन्द्र	05-03-2035
मंगल	30-05-2035
राहु	29-07-2035
गुरु	01-01-2036
शनि	18-05-2036

केतु	
से	28-10-2036
तक	28-12-2037
केतु	28-10-2036
शुक्र	22-11-2036
रवि	01-02-2037
चन्द्र	22-02-2037
मंगल	30-03-2037
राहु	24-04-2037
गुरु	26-06-2037
शनि	22-08-2037
बुध	29-10-2037

त्रिभागी दशा

बुध	
से	19-12-2007
तक	25-12-2009
बुध	04-04-2000
केतु	01-12-2000
शुक्र	22-10-2002
रवि	17-05-2003
चन्द्र	26-04-2004
मंगल	23-12-2004
राहु	05-09-2006
गुरु	10-03-2008
शनि	25-12-2009

केतु	
से	25-12-2009
तक	25-08-2014
केतु	04-04-2010
शुक्र	13-01-2011
रवि	08-04-2011
चन्द्र	28-08-2011
मंगल	05-12-2011
राहु	17-08-2012
गुरु	01-04-2013
शनि	27-12-2013
बुध	25-08-2014

शुक्र	
से	25-08-2014
तक	25-12-2027
शुक्र	13-11-2016
रवि	15-07-2017
चन्द्र	25-08-2018
मंगल	05-06-2019
राहु	05-06-2021
गुरु	16-03-2023
शनि	25-04-2025
बुध	16-03-2027
केतु	25-12-2027

रवि	
से	25-12-2027
तक	25-12-2031
रवि	07-03-2028
चन्द्र	07-07-2028
मंगल	30-09-2028
राहु	07-05-2029
गुरु	18-11-2029
शनि	07-07-2030
बुध	30-01-2031
केतु	25-04-2031
शुक्र	25-12-2031

चन्द्र	
से	25-12-2031
तक	25-08-2038
चन्द्र	14-07-2032
मंगल	03-12-2032
राहु	03-12-2033
गुरु	24-10-2034
शनि	14-11-2035
बुध	24-10-2036
केतु	15-03-2037
शुक्र	25-04-2038
रवि	25-08-2038

मंगल	
से	25-08-2038
तक	25-04-2043
मंगल	03-12-2038
राहु	16-08-2039
गुरु	30-03-2040
शनि	25-12-2040
बुध	23-08-2041
केतु	30-11-2041
शुक्र	10-09-2042
रवि	04-12-2042
चन्द्र	25-04-2043

राहु	
से	25-04-2043
तक	25-04-2055
राहु	10-02-2045
गुरु	17-09-2046
शनि	11-08-2048
बुध	24-04-2050
केतु	05-01-2051
शुक्र	05-01-2053
रवि	12-08-2053
चन्द्र	12-08-2054
मंगल	25-04-2055

गुरु	
से	25-04-2055
तक	24-12-2065
गुरु	26-09-2056
शनि	05-06-2058
बुध	09-12-2059
केतु	23-07-2060
शुक्र	03-05-2062
रवि	14-11-2062
चन्द्र	05-10-2063
मंगल	19-05-2064
राहु	24-12-2065

शनि	
से	24-12-2065
तक	24-08-2078
शनि	26-12-2067
बुध	11-10-2069
केतु	08-07-2070
शुक्र	17-08-2072
रवि	05-04-2073
चन्द्र	26-04-2074
मंगल	21-01-2075
राहु	15-12-2076
गुरु	24-08-2078

योगिनी दशा

दशा	पति	उम्र	तक
उल्का	शनि	6 साल	12-01-2009
सिद्धा	शुक्र	7 साल	13-01-2016
संकटा	राहु	8 साल	13-01-2024
मंगला	चन्द्र	1 साल	12-01-2025
पिंगला	रवि	2 साल	12-01-2027
धान्य	गुरु	3 साल	12-01-2030
भ्रामारी	मंगल	4 साल	12-01-2034
भद्रिका	बुध	5 साल	12-01-2039
उल्का	शनि	6 साल	12-01-2045
सिद्धा	शुक्र	7 साल	13-01-2052
संकटा	राहु	8 साल	13-01-2060
मंगला	चन्द्र	1 साल	12-01-2061
पिंगला	रवि	2 साल	12-01-2063
धान्य	गुरु	3 साल	12-01-2066
भ्रामारी	मंगल	4 साल	12-01-2070
भद्रिका	बुध	5 साल	12-01-2075

शटत्रिंश दशा

पति	उम्र	तक
शनि	6 साल	12-01-2009
शुक्र	7 साल	13-01-2016
राहु	8 साल	13-01-2024
चन्द्र	1 साल	12-01-2025
रवि	2 साल	12-01-2027
गुरु	3 साल	12-01-2030
मंगल	4 साल	12-01-2034
बुध	5 साल	12-01-2039
शनि	6 साल	12-01-2045
शुक्र	7 साल	13-01-2052
राहु	8 साल	13-01-2060
चन्द्र	1 साल	12-01-2061
रवि	2 साल	12-01-2063
गुरु	3 साल	12-01-2066
मंगल	4 साल	12-01-2070
बुध	5 साल	12-01-2075

दशा स्वामी ग्रहों की स्थितियां, ग्रह दशा उम्र व दशा चक्र की उम्र योगिनी और शट त्रिम्श दशा में समान होती है। दोनों दशाओं में सिर्फ दशा की शुरुआत अलग ग्रहों से होती है, बाकी सभी बातें समान हैं।

पाराशर की उपदेश है की अगर जातक का जन्म दिन सूर्य होरा में हो या रात में चन्द्र होरा में हो तो शट त्रिंश दशा का उपयोग करना चाहिये

इसी युक्ति से अगर जन्म दिन में चन्द्र होरा या रात में सूर्य होरा में हो तो योगिनी दशा का इस्तेमाल करना चाहिये

ग्रह योग फल

वीणा योग

यह अनुकूल योग नही है। जीवन के तीसरे हिस्सो में से पहला (२४ वर्ष तक का) सब से श्रेष्ठ रहेगा, उस के बाद आपका भाग्य कम होता जायेगा और हो सकता है जीवन के आखरी हिस्से में (४८ से ७२ वर्ष दरमियान) आप को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़े। अगर आपकी कुन्डली में दूसरे शुभ योग मौजूद हैं तो इस योग के परिणामों में सुधार हो सकता है।

गजकेसरी योग

यह एक शुभ योग है आप मे बहुत अभिष्ट गुण होगे। आप स्वस्थ, धनवान, विद्वान, सम्माननीय, दयालू, उदार, सत्यनिष्ठ और भद्र व्यकित हैं। आप धार्मिक वृति के ओर दीर्धायु बनेंगे। आप में नेतृत्व के गुण होगे और आप बहुत प्रसिद्ध होगे।

हंस योग

यह शुभ योग आपको सुंदर शरीर व कई अच्छे गुण देगा। आप शुद्ध संस्कार व विचार रखते हैं व परोपकार के लिये काम करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिती मजबूत होगी, व अपनी मदद करने की प्रवृत्ति के कारण आपको समाज में अच्छा स्थान मिलेगा। आपकी समाज में प्रभावशाली स्थिती होगी।

सरल योग

यह एक शुभ योग है। यह योग आपको .ढ–प्रतिज्ञ, विद्वान, सत्यनिष्ठ, धनी, समृद्ध और आदरणीय बनायेगा। आपके सम्बन्धीओं के साथ आप जीवन का आनंद उठाएगें। आपके बहुत से मित्र होंगे। आपको स्थायी प्रतिष्ठा मिलेगी।

विपरीत राज योग

यह भाग्यकारक योग है। यह योग आपको अपने मार्ग में आने वाले अवसरों का भरपूर उपयोग करने की योग्यता देगा और आप जल्दी तरक्की करेगे। आपका प्रभाव राजसी और आदेशात्मक वृति वाला है और आपको अपनी उपलब्धीओं के लिये ख्याति मिलेगी। आपको विविध स्त्रोतों से बहुत धन मिलेगा किन्तु हो सकता है किन्हीं कारणों से आपका मन अशान्त रहे।

विद्या योग

यह योग आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम प्रगति देगा। आपकी बुद्धि तेज है, और प्रखर स्मरणशक्ति आपको जीवन में काफी आगे ले जायेगी। आप समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखते हैं और किसी भी कार्य को उत्तम तरीके से करने की तरकीबें ढूंढ़ निकालते हैं।

कहल योग

यह अनुकूल योग है। यह आपको हिम्मती और साहसी बनायेगा। आपकी साहसी वृति और जीद्दि स्वभाव से आप अपनी आसपास के व्यकितओ का ध्यान आकर्षित करेंगे। आप किसी प्रतिष्ठान के प्रमुख बन सकते हैं। आपको अपने अधिकारीओं से सहायता मिलेगी व आपको आर्थिक लाभ होगा। अपने जीवन के पिछले दिनो में आप उदार बनेंगे और सुखी जीवन जीएंगे।

शुभवशी योग

यह एक अनुकूल योग है। आप का .ष्टिकोण अत्यंत उदार होगा और आप में बहुत वांछित गुण होंगे। आप के अच्छे व्यवहार और सच्चे चरित्र के काण प्रसिद्धि मिलेगी। आपको लोकप्रियता मिलेगी और जीवन में आप विकास करेंगे।

इष्टबल योग

यह एक शुभ योग है। यह योग आप पर समृद्धि की वर्षा करेगा व आप को शक्तिशाली पद दिलायेगा। सामाजिक रूप से आप बहुत लोकप्रिय व प्रभवशाली बनेंगे। आप को अपने परिवार व जानने वालों का आदर एवं सम्मान मिलेगा।

साधारण राज योग

यह प्रबल राज योग है। यह योग आपको सरकारी अथवा बड़ी प्रायवेट कंपनी में वांछित पद दिलायेगा।

उत्तम गृह योग

यह शुभ योग है। आप सुंदर घरों के स्वामी बनेंगे व सुविधायुकत जीवन जीयेगे। हो सकता है कि आप अपने घर के द्वारा धनार्जन भी करें।

उत्तम गृह योग

यह एक लाभदायक योग है। आप बहुमंजिली इमारतों के मालिक बनेगे व सुविधायुकत जीवन जीयेगे। हो सकता है की यह इमारतें आपके धनार्जन का स्त्रोत बनें।

बन्धु पूज्य योग

यह एक अच्छा योग है। आपकी उपलब्धियाँ बहुत उच्च होंगी जिन की वजह से आपके मित्र तथा सम्बन्धी आपके साथ आदर युक्त व्यवहार करेंगे।

शंख योग

यह एक शुभ योग है यह योग आपको सभी प्रकार के आनंद के साथ एक लंबा और समृद्ध जीवन देगा। आपका परिवारिक जीवन सुखी एवं समृद्धिपूर्ण होगा। अपने परिवार के सभी सदस्यों द्वारा आपको प्रेम की प्राप्ति होगी। आप विद्वान बनेंगे, मानवतावादी .ष्टिकोण अपनायेगे व सत्यनिष्ठ बनेंगे। आपके सदकार्यो के लिये आपको स्थायी प्रसिद्धी मिलेगी।

दरिद्र योग

यह एक दुर्भाग्यकारक योग है। आपका जन्म अनुकूल परिस्थितियों में नही हुआ और जीवन में आगे बढ़ने के लिये आपको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। आपको आर्थिक समस्यायों का सामना करना पड़ेगा और हो सकता है कि कर्ज या सट्टे के कारण आपको आर्थिक परेशानियां आयें। आपको सट्टे जैसे कार्यों से सदा दूर रहना चाहिए। आपकी कुन्डली के दूसरे भाग्यदायक योग इस योग के दुष्प्रभाव को कम कर सकते हैं।

ग्रहदृष्टि के फल

रवि संयोग बुध
यह योग यात्रा,व्यापार और लेखन जैसे रचनात्मक कार्यो के लिए अत्यन्त शुभ है।. इसके शुभ प्रभाव से बुद्धिमता व विनोद प्रियता की प्राप्ति होती है। इस योग से धन की स्थिति भी अच्छी रहती है।

रवि संयोग गुरु
सफलता तथा भाग्य दोनों तक आपकी पहुँच रहेगी। आप आशावादी एवं आत्मविश्वास से भरपूर रहेगें। आप काफी चर्चित रहेगें। आपको अधिकार तथा ताकत भी मिलेगी। समय के साथ–साथ आपकी समृद्धि भी बढ़ेगी।

रवि संयोग रुद्र
आपमें भावनाओ मे बह जाने की प्रवृति है। आपमे उन्नति के लिए अपने व्यक्तित्व को बदलने की क्षमता है तथा साथ ही जटिल समस्याओं का हल ढूढ़ने मे आप सक्षम हैं। आपका सम्पर्क उच्च वर्ग के लोगों से रहेगा–चाहे वे भौतिक वर्ग के हो या फिर आदयात्मिक वर्ग के।

बुध सेमी स्क्वायर शुक्र
आपको अपने निजी सम्बन्धों में चुनौतियों का सामना करन पड़ सकता है जिनका सामना आप अपनी तालमेल बनाने की योग्यता और व्यवसायिक .ष्टिकोण के बल पर कर लेंगे। अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण रखने से आपको फायदा मिलेगा।

बुध संयोग गुरु
इस योग से प्रभावित जातक मानसिक रुप से काफी सशक्त होते है। व्यापार एवं अन्य व्यवसायिक गतिविधियों मे आप काफी भाग्यशाली साबित होते हैं। आप का सामाजिक जीवन काफी गतिमान रहता है तथा आपकी सभी महत्वकाक्षाएँ पूर्ण होती हैं। आपमे सहनशीलता का गुण भी पाया जाता है।

बुध सेक्सटाइल राहु
बुध राहु का त्रिकोण आपके व्यक्तित्व मे चुम्बकीय आकर्षण पैदा करता है, जिससे लोग आपकी तरफ खिंचे चले आते है।

बुध संयोग रुद्र
आप खोजी प्रवृति के हैं तथा खोज एवं अनुसंधान के क्षेत्रों में काफी सफल हो सकते हैं। बुध एवं प्लूटो का योग बातचीत की कला मे भी दक्षता देता है। इस कला के बल पर अच्छा प्रभाव छोड़ते हैं। आपमे पूर्वानुमान लगाने की भी अच्छी क्षमता है।

शुक्र सेमी स्क्वायर गुरु
गुरु–शुक्र का .ष्टि सम्बन्ध आपको एक विलक्षण इंसान बनाता है। आप लोगं से मिलना पसन्द करते हैं तथा अपना काफी समय ऐसे ही व्यतीत करते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है तथा आप बचत व निवेश भी करते हैं। आप दार्शनिक हैं परन्तु कभी–कभी भावुक भी हो जाते हैं।

शुक्र ट्राइन इन्द्र

आप काफी गैर पारम्परिक तथा खतरा उठाने वाली प्रवृति के व्यक्ति हैं। आप जीवन में उतेजना पसन्द करते हैं इसलिए आप नवीन सम्बन्धों की तरफ आकर्षित होते हैं। आप संगीत में भी गहरी रुचि रखते हैं।

शुक्र सेमी स्क्वायर रुद्र

आप अपने सम्बन्धों को लेकर अत्यधिक भावुक रहेंगे परन्तु परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालना आपको आता है। आपके प्रेम या वैवाहिक जीवन में परेशानी आ सकती है।

गुरु सेक्सटाइल राहु

आप एक सुशिक्षित इन्सान हैं। आपका जीवन के प्रति दृष्टिकोण दार्शनिक है। आपको अपने कार्य क्षेत्र में खूब सफलता मिलती है तथा आप आर्थिक रुप से भी मजबूत होते है। लम्बे समय में आपकी बुद्धिमता व शिक्षा आपके काम आती है।

गुरु संयोग रुद्र

आप जीवन में प्रभुत्व प्राप्त करेगे। आप उत्साही व्यक्ति हैं तथा सता व प्रभुत्व प्राप्त करने से आपको कोई नहीं रोक सकता। कभी–कभी अधिकारी गण से भी भिड़ जाएँगे परन्तु अन्त मे आपको ही विजय व कीर्ति मिलेगी। आप धार्मिक कार्यों में भी रुचि लेगे।

चन्द्र सेक्सटाइल वरुण

आपकी सीखने की क्षमता अद्‌भूत है। आप संवेदनशील व आध्यात्मिक प्रवृति के है। आपकी कविता व संगीत मे भी गहरी रुचि है। आपमे हमदर्दी की भावना है जिससे आप दूसरों की मदद करना चाहेंगे। आपकी बौद्धिक क्षमता भी काफी सशक्त है।

केतु ट्राइन रुद्र

आप कभी–कभी अत्यधिक भावुक हो जाते हैं। आपका पारा सातवें आसमान पर चढ़ जाता है इसीलिए आपको अपने स्वभाव पर नियंत्रण रखने की जरुरत है।

भविष्यवाणी

खास खूबियां

आप में धार्मिक वृत्ति होगी व आप उग्रतावादी और धर्मांधता की मनोवृत्ति रखते हैं। प्रेम सम्बन्ध आपको शक्तिशाली दुश्मनों के साथ वाद–विवाद व झगड़े की तरफ ले जा सकते हैं। अपनी गलत मनोवृत्तियों पर आपको नियंत्रण रखना होगा अन्यथा आपके गलत मित्र और गुप्त शत्रु आपको हानि पहुंचा सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा को नुक्सान होगा।

आपका व्यवहार दयालु और स्नेहशील तथा स्वभाव मिलनसार होगा। आप के गुण आपको उच्च स्थान पर ले जायेंगे और सफलता व धन दिलायेंगे। आपके वैवाहिक जीवन में दो स्त्रियों का साथ हो सकता है, अर्थात आपकी दो शादी हो सकती है अथवा आपके विवाहोत्तर संबंध कायम हो सकते हैं। आपका स्वभाव आवेगशील होगा व आप अपने कार्यों के फल प्राप्त करने के लिये अत्यंत बेकरार रहेंगे। धार्मिक अथवा कट्टरपंथी उत्साह आपको कल्पनाशीलता से भरी परियोजनाओं की ओर ले जायेगा, जिन में आपको निराशा हाथ लगेगी।

आपको झगड़े, दुश्मनों अथवा गुप्त कारणों की वज़ह से धन हानि हो सकती है। आपके वैवाहिक जीवन में समस्याएं आयेगी। स्त्रियों का प्रभाव आपके जीवन में अहितकर होगा परन्तु उच्च पद पर विराजमान आपके मित्रों की सहायता से आपकी दिक्कतें दूर होंगी। आपका स्वभाव कभी अवसरवाद तो कभी दुस्साहस के बीच बदलता रहेगा। अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग कर के आपको यह प्रवृति टालनी होगी अन्यथा लोग आपको अविश्वसनीय व्यक्ति मान सकते है।

मानसिक खूबियां

आप स्वभाव से जिद्दी हो सकते हैं, आप किसी बात की पूरी जानकारी के बिना अपनी बात को मनवाने की कोशिश कर सकते हैं जो आपके लिए नुकसानदेय हो सकता है। संघर्ष की स्थिति में आप पीछे हट सकते हैं। आप धर्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हो सकते हैं, धर्म के मामले में आप अंधविश्वासी हो सकते हैं और आपकी सोच रूढ़ीवादी हो सकती है।

शारीरिक सरंचना

आपका कद कम और शरीर मांसल होगा तथा रंग पीला और आंखे सामान्य से थोड़ी बड़ी और पारदर्शक होंगी। आपके हाथ पैर खास कर पैर छोटे और कंधे झुके हुए होंगे। आपके बाल काले और मोटे हैं।

स्वास्थ

आपकी सूर्य राशी आपके रक्त संचार तंत्र, पैर, पैर की हड्डियों व यकृत पर प्रभाव रखती है। आपको जिगर संबंधित तकलीफें व पैर में चोट लगने से परेशानी हो सकती हैं।

आप ऊर्जा से भरे हैं लेकिन ज्यादा ऊर्जा आपके लिये चोट का कारण बन सकती है। ज्यादा चिंता आपके लिये हानिकारक है।

नियमित व संतुलित जीवन आपके लिये जरूरी है। आपको चिंता से दूर रहना चाहिये। खीरे, टमाटर, बादाम, गन्ने का सेवन आपके लिए श्रेयकर होगा। आपकी कुन्डली में लग्न भाव दूषित नहीं है इसलिये

आप बीमार कम पड़ेंगे व साधारणतः आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

आपकी कुन्डली में चंद्र किसी भी प्रकार से दूषित नही है इसलिये आपको पर्यावरण के कारण होने वाले रोग होने की संभावना बहुत कम है।आपकी कुन्डली में बुध सूर्य को दूषित कर रहा है इसलिये आपकी स्मरणशक्ति कमजोर हो सकती है। आप थोडे अधीर चित्त और चिंतित रहेंगे। आपकी कुन्डली में गुरु सूर्य को दूषित कर रहा है आपको रक्त के दबाव से संबंधित बीमारियाँ हो सकती है। आपकी कुन्डली में सूर्य प्लूटो से दूषित हो रहा है इसलिये आपको वातावरण में होने वाले प्रदूषण जैसे धूंआं, धूल इत्यादि से परेशानी हो सकती है।

शिक्षा एवं जीविका

आपकी कुन्डली में विद्यमान ग्रहयोग आपको तीव्र बुद्धि प्रदान कर रहे हैं एवं उच्च शिक्षा प्राप्ति की ओर संकेत कर रहे हैं। आप कम से कम स्नातक होंगे। आपको शिक्षा से सम्बन्धित कई विषयों में रूचि होगी, फलस्वरूप आप कई विषयों में अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण करेंगे। आपके शौक उच्च श्रेणी के होंगे व आप सम्मानित व्यक्ति होंगे।

समाज में अपने कार्यों के लिये आपको सम्मान मिलेगा और लोग आपकी सलाह की इज़्ज़त करेंगे।

आपकी कुन्डली में विद्ययमान कुछ ग्रहयोग शुभ "विद्या योग" बनाते हैं। यह योग आपको उच्च शिक्षा और शैक्षणिक क्षेत्र में सफलता देता है। कुछ गंभीर विषयो का आप ज़िन्दगी भर अभ्यास करेंगे। आपको लोग आदर देंगे।

आपकी कुन्डली में विद्यमान ग्रहयोग बताते हैं कि आप अपना व्यापार नहीं करेंगे। आप एक सफल नौकरीकर्ता होंगे व आपकी लगातार प्रगति होती रहेगी। अपने प्रयासो को सार्थक दिशा दे कर आप उच्च पद प्राप्त करेंगे।

संपत्ति व उत्तराधिकार

परिवारिक–संपत्ति की दृष्टि से लाभ और संपत्ति आपके पीछे परछाई की तरह रहेंगी। आपके पास वैभवशाली, सुविधाजनक और सुंदर तरीके से सजाये घर होंगे। आपका पारिवारिक माहौल शांत व आनन्दमय होगा।

आपकी कुन्डली में लाभभाव का स्वामी प्रतिकूल छठे भाव में है। इस ग्रहस्थिति के दुष्प्रभाव के कारण आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। आपके सम्बन्धियों का व्यवहार आपके प्रति अच्छा नही होगा और आपके कुछ कर्मचारी बेइमान होंगे जो आपको नुकसान पहुंचायेंगे। आपके लिये दवाई और चिकित्सालय के उपयोग की चीज़ें, घर की चीज़ें, रिपेयरिंग, और उद्योग में काम आने वाली चीज़ों का व्यापार अनुकूल है।

आपकी कुन्डली में विरासत का स्वामी खुद के भाव में है। यह शुभ "सरल योग" को जन्म देता है। यह आपको विरासत में मिलने वाली संपत्ति कि बाबत भाग्यशाली बनाता है। आपको माता पिता और जीवनसाथी की ओर से संपत्ति प्राप्त होगी। आपका जीवन साथी धनवान परिवार से होगा और आप साधारण परिवार से।

विवाह एवं वैवाहिक जीवन

आपकी कुन्डली में लग्न भाव का स्वामी और सप्तम भाव का स्वामी शुभ संयुक्त हैं। यह शुभ संयोग आपके अपने जीवन साथी से सम्बन्ध अच्छे होने का विश्वास देता है। आप एक दूसरे के साथ प्रेम और अच्छा बर्ताव करेंगे और उससे आपका सम्बन्ध स्थायी बनेगा।

यात्रा एवं भ्रमण

आपकी कुन्डली में अधिकतर ग्रह चर और द्विस्वभाव राशिओं में हैं। आप जन्म से ही घूमने के शौकीन होंगे व बहुत सारी जगह घूमेंगे। यात्रा आपके जीवन पर बहुत प्रभाव रखेगी और इससे आपके जीवन में बहुत बदलाव आयेगा। आपको व्यवसाय के लिये बहुत यात्रा करनी पड़ेगी। आपकी कुन्डली में ज्यादातर ग्रह त्रिकोण भाव और चर राशियों में है। आपको अपने व्यवसाय के कारण काफी यात्रा करनी पड़ेगी। आप अपने शौक व आनन्द के लिये भी यात्राएं करेंगे।

शुभ रत्न

सारे शुभ रत्नों में पुखराज आपके लिये सबसे अनुकूल है।

आपको ५ से ७ रत्ती का पुखराज सोने की अंगूठी में दायें हाथ की तर्जनी उंगली में वीरवार को पहनना चाहिए।

पुखराज का सस्ता उपरत्न टोपाज़ है जिसे आप सोने की अंगूठी में पहन सकते है। रत्न को पहनते समय आपको इस मंत्र का जाप करना चाहिये।

" देवानां च ऋषिनां च गुरु कांचन संनिभम
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तम नमामि बृहस्पतिम।"

रत्नों का ऊपर दिया गया वज़न १८ साल से ऊपर के पुरुषों के लिये है। स्त्रियों के लिये यह वज़न ३/४ से १/२ तक और छोटे बच्चो के लिये १/२ से १/४ भाग का रहेगा।

ग्रहों की स्थिती का फल

लग्न फल

आपका लग्न है मीन. आपके लग्न का स्वामी जूपीटर यानी बृहस्पती है यह आपकी राशी के लिए शुभ चिन्ह है.

आपकी राशी मीन हैं. आप दिमागी तौर पर व्यवस्थित और उदार होंगे. आपकी आदत के मुताबिक आप किसी भी एक विचार को लेकर परेशान रहेंगे, उसीके विषय में सोचते रहेंगे. आप अपना हर कदम फूंक–फूंककर रखेंगे अतः आपके गलत परिणामों पर पहुंचने की संभावना काफी कम हैं. आप खर्चीले होंगे और धन आपके लिए ज्यादा कीमत नहीं रखेगा. अगर आपके दोस्तों और रिश्तेदारों वगैरह को आपकी सहायता की ज़रुरत आ पडती है तो आप किसी भी तरह से उन्हें सहायता देने की कोशिश करेंगे. हो सकता है कि आप बेहद भावुक, कल्पना लोक में रहनेवाले और आदर्शवादी बनें. हो सकता है की किसी नए कार्य की शुरूआत में उसपर आपका पूरा प्रभाव बना रहे किन्तु यह प्रभाव कार्य समाप्त होते–होते गायब हो जाएगा. आप अपनी भावनाओं में बह सकते है पर बाद में आप अपने आदर्शों और मूल्यों को त्याग देंगे. आपकी उम्र के साथ–साथ जीवन के अनुभवों द्वारा आपके विचारों में सुधार हो जायेगा. यदि आपका बृहस्पती अच्छे स्वभाव का है तो आपका स्वभाव अच्छा होगा और लोग आपके तेज़ के कारण आपकी ओर आर्कषित होंगे.

राशियों में ग्रहों की स्थिति का फल

रवि

आपके चार्ट में सूर्य धनु राशी में मौजूद है. आप गर्वीले टाईप के इंसान होंगे. आपको स्वयं पर अभिमान होगा. आपके आदर्श बहुत ऊंचे होंगे. आपके जीवन का केंद्र बिन्दु महान चीज़ें होगी. आप महत्वाकांक्षी भी बहुत होंगे. आप अपनी जान पर खेलकर बहुत तकलीफें उठाकर कोई बहादुरी का कार्य करेंगे. आपकी इस वीरता के लिए आपको महत्वपूर्ण सम्मान मिलेगा. आपको प्राचीन साहित्य के साथ–साथ गीत–संगीत से भी प्रेम हो सकता है. आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की तरफ रहेगा. अपनी इसी श्रद्धा के चलते आप साधू, संत और सभी पुण्यात्माओं क उचित आदर–सम्मान करेंगे. आप अपनी पत्नी और बच्चो के साथ सुखमय और पारिवारिक जीवन का आनंद लेंगे.

बुध

आपकी कुंडली में मरक्यूरी अर्थात बुध ग्रह धनु राशी में है. आपका स्वभाव उतावला और लापरवाह किस्म का हो सकता है. मगर आप जल्द ही स्वयं पर काबू कर लेंगे. आप ऐसी वस्तुओं और कार्यों के पीछे भागेंगे जिससे समाज में आपको इज्जत मिले मगर आपके साथ ऐसा कम ही होगा. अगर किसी प्रकार से जूपीटर ग्रह मरक्यूरी या इसके किसी भी पहलू पर संयोजित होता है तो स्थित दुसरी होगी तब आपको सम्मानजनक पदवी मिलेगी या फिर अपको विशेष सम्मान मिलेंगे. अगर राहु ग्रह एक एंगल पर मरक्यूरी से रहता है. तो आपको अकादमी आदि में सम्मान या पदवी मिलने की संभावना है. यदि मार्स मरक्यूरी पर प्रभाव डालेगा तो आप लड़ाकी व झगड़ालू किस्म के हो जायेंगें.

शुक्र

आपकी कुंडली में वीनस तुला राशी में स्थिति है. आपका स्वभाव बेहद दयालू, प्यारा और उपकारी होगा. इसके साथ ही आप शानदार पर्सनालिटि के मालिक होंगे. आपका मिजाज़ खुशनुमा होगा. भले

ही आप किसी भी वजह से किसी के संपर्क में आए, सामनेवाले का दिल जीत लेंगे. लोग आपको पसंद करेंगे. आप व्यापार आदि के द्वारा अपना भाग्य चमकायेंगे. आपकी दोस्ती अच्छे इंसानों से होगी आपको भाई–बंधुओ से लाभ होगा. आप भरोसे के काबिल और ईमानदार बनेंगे. आप सज्जन और रहमदिल होंगे. शायद आप काफी मशहूर होंगे और आपको कोई आदरणीय ओहदा भी प्राप्त होगा.

मंगल

आपकी कुंडली में मार्स यानि मंगल ग्रह मिथुन राशी में है. जब तक की जूपीटर या वीनस, मीन में या फिर मरक्यूरी, कन्या में नहीं जाते, आपकी स्थिति काफी सहायक नहीं हो सकती. आपका स्वभाव लड़ाई–झगड़े करनेवाला हो सकता है. आप बेईमानी का रास्ता अपना सकते है. आपको पित्त–संबंधी और श्रवण संबंधी रोगो की शिकायत हो सकती है. आप काफी खर्चीले होंगे. अपने रिश्तेदारों के साथ आपका बरताव कुछ बुरा रहेगा. आपकी पढ़ाई–लिखाई काफी ऊंची होगी. इसके बावजूद आप अपनी ऊंची योग्यता का लाभ नहीं उठा सकेंगे. जब तक आपकी कुंडली में उल्लेखनीय सुधार नहीं आते, तब तक आप अपने वतन में कभी खुश नहीं रह सकेंगे. आपको अपना घर छोड़ना पड़ेगा और अपनी रोजी की खातिर दूर–दराज़ के इलाके में जाना होगा.

गुरु

आपकी कुंडली में ज्यूपीटर अर्थात गुरु ग्रह धनु राशी में स्थित है. यह एक बहुत ही ज्यादा शुभ संकेत है. इससे आप उचित शरीर, लंबे कद और प्रभावशाली चेहरे के मालिक बनेंगे. आपकी आँखे आकर्षक तथा लोगों को अपने बस में करनेवाली होंगी. आप महन विचारों वाले, विनम्र और इंसानियत के जज़्बे से भरे होंगे. आप एक विद्यासंपन्न इंसान बनेंगे. अपने भले आचरण और विनम्र बरताव से आप बड़ी तादात में दोस्तों का दिल जीत लेंगे. आपको आऊटडोर में स्पोर्टस आदि खेलना पसंद होगा. इसके अलावा आप रोचक खोजों को भी पसंद करेंगे. आपके विचार धार्मिक होंगे. और आप एक सुखमय जीवन बितायेंगे.

शनि

आपकी कुंडली में सैटर्न अर्थात शनि ग्रह सिंह राशी में स्थित है. यदि सूर्य सही प्रकार से आपकी राशी में स्थित नहीं होगा तो आपको परेशानियों का सामना करना पड़ेगा. आप बीमारियों द्वारा तकलीफें उठाएंगे, आपको अपने भाई–बंधुओ, संतान, पत्नी पर खाली रक्कम खर्च करनी पड़ेगी. आपको अपने कर्मचारियों या नौकर आदि से धोखा मिल सकता है, जिससे आपको कठिनाईयां उठानी पड़ सकती हैं. वैसे तो आप सज्जन और भले व्यक्ति होंगे. मगर आपमें वीरता और साहस का अभाव होगा. समय आनेपर आप अपनी बहादुरी साबित नहीं कर पाएगे. आपको ऐंठन या फिर ऑखो की कोई बीमारी हो सकती है. हो सकता है कि आप लड़ाई–झगड़ो में उलझ जाएं या फिर किसी लंबे समय तथा चलने वाले मुकदमे में आपको परेशानियां उठानी पड़ जाएं.

चन्द्र

आपके चार्ट में चन्द्र मीन राशी में स्थित है. इसलिए आपकी जन्मराशी है मीन. यह मादा राशी जलीय, फलदायक और सामान्य है. इस राशी का लग्न स्वामी जूपीटर है. इसीलिए आपकी मानसिक अवस्थाऐं और कुछ विशेष गुण इससे भी प्रभावीत रहेंगे. इसके अथवा आपके ऊपर आपके चन्द्र–लग्न का भी खासा असर रहेगा.

आप चन्द्र मीन राशी में मौजूद है. इसका मतलब की आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे. आपकी आय का मुख्य स्त्रोत जल या फिर जल से संबंध रखती वस्तुओं आदि से रहेगा. आप सुखी और संपन्न रहेंगे.

आप अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ खुशहाल परिवार का आनंद उठाएगे. अलबत्ता, आप थोड़े अस्थिर और सुख ढूंढनेवाले मिजाज़ के रहेंगे. यह भी हो सकता है कि कुछ लोग आपको खुदगर्ज और विश्वासपात्र न समझे. मगर आपको इससे कोई फर्क नहीं पडेगा. आप अपने विरोधियों को मात देंगे. इसके अलावा आप दान–पुण्य में काफी रुचि लेंगे. आप स्वयं में लोक कल्याण की भावना भी बनाए रखेंगे. आपके इन अच्छे कर्मों के कारण लोग आपको लंबे समय तक एक अच्छे इंसान के रूप में याद रखेंगे.

राहु

आपकी कुंडली में राहु, कुंभ राशी में मौजूद है. यह राहु की सबसे उत्तम, अति उत्तम स्थित है. अगर सैटर्न या ज्यूपीटर सही ढंग से जमे है तो स्थिति और भी ज्यादा शुभ होगी. इससे आप बुद्धिमान और चालाक बनेंगे. आपको उच्च शिक्षा प्राप्त होगी. आपके काफी सारे मित्र बनेंगे और आप कई कारणों से लाभ प्राप्त करेंगे. अगर चन्द्रमा, राहु के साथ है तो आपकी माताजी की सेहत और कुशलता की ओर ध्यान देने की जरूरत पड़ सकती है मगर आपको खेती–बाड़ी और भूमी अदि से काफी लाभ होगा. अगर मार्स (मंगल ग्रह) या ज्यूपीटर (बृहस्पती) राहु के साथ है तो आप उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) से पीड़ित रहेंगे. यदि राहु, सतभिषा नक्षत्र में स्थित है तो आपको विशेष लाभ होंगे. इसके अलावा आपको मित्रों से भी लाभ प्राप्त होंगे.

केतु

आपकी कुंडली में केतू, सिंह राशी में स्थित है. यह केतू के लिए अनुकूल स्थिति है. अगर सूर्य भली प्रकार से स्थित है या फिर ज्यूपीटर केतू को प्रभावित कर रहा है तो दशा और भी बेहतर होगी. इससे आप बुद्धिमान और चतुर बनेंगे. आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे. आपके बहुत से मित्र होंगे और आप कई कारणों से लाभ प्राप्त करेंगे. अगर चन्द्रमा, केतू को प्रभावित करता है तो आपको अपनी माताजी की कुशलता और सेहत की ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत होगी. मगर आपको भूमि तथा खेती–बाड़ी की वस्तुओ से विशेष लाभ मिलने कि संभावना है. अगर आपका लग्न सिंह है तो आपके अपनी पत्नी के साथ विभिन्न प्रकार के मतभेद हो सकते है. अगर, किसी प्रकार से केतू, मघा नक्षत्र में स्थित है तो आपको स्वयं की मेहनत से लाभ होंगे.

इन्द्र

आपकी कुंडली में युरेनस, कुंभ राशि में स्थित है. इससे आप बुद्धिमान और अन्तर्ज्ञान वाले बनेंगे. हो सकता है कि आपको कला और विज्ञान जैसे विषयों में गंभीर दिलचस्पी रहे. इसके अलावा आप कई अलग–अलग क्षेत्रों में औपचारिक और अनौपचारिक ज्ञान प्राप्त करेंगे. इससे अलावा प्राचीन साहित्य और कठिन विषय आपको बहुत ज़्यादा आकर्षित करेंगे. आप ज्ञानी बनेंगे. आपको ज्योतिषी शास्त्र, अंतरिक्ष विद्या या मनोचिकित्सा जैसे कार्यों में विशेष सफलता हासिल हो सकती है. यदि सैटर्न पीड़ित है तो आप तनावग्रस्त रहेंगे. आपको अत्याधिक तनाव से निजात पाना चाहिए.

वरुण

आपकी कुंडली में नेपचून मकर राशी में मौजूद है. अगर नेपचून, ज्यूपीटर या वीनस के समागम में नहीं है और न प्रभाव में है और सैटर्न भी मज़बूत नहीं है तो इससे आपके शरीरिक नक्श असंतुलित बनेंगे, जैसे विशाल शरीर पर छोटा चेहरा होगा या फिर ऐसा ही कुछ असंतुलन रहेगा. अगर नेपचून अशुभ ग्रह से पीड़ित है तो आप कुछ लालची बन जायेंगे और धोखे और छल–कपट भरे सौदे करने से पीछे नहीं रहेंगे.

रुद्र

आपकी कुंडली में प्लूटो, धनु राशी में मौजूद है. आप में एक खास तरह की आदत होगी. आप एक परवाह करनेवाले लापरवाह होंगे और आपके जीवन के विभिन्न उतार–चढावों में आपकी यह आदत घटती–बढ़ती रहेगी. अगर प्लूटो शुभ ग्रह के समागम में है या फिर प्रभाव में है तो इससे आपको विशेष रूप से दर्शनशास्त्र में रुची होगी. इसके अलावा आपको धार्मिक कार्यों से भी लगाव होगा. मगर यदि प्लूटो अशुभ ग्रह के समागम में है या फिर प्रभाव में है तो आपका झुकाव सट्टेबाजी, जुआ आदि की तरफ होगा और आप डींगे मारनेवाले व्यक्ति बनेंगे.

भाव फल

लग्नपति

आपकी कुंडली में लग्न स्वामी दसवें घर में स्थित है जिसे कर्मों का घर भी कहते है. नौकरी के अलावा यह घर दर्जे, ओहदा विषय, सम्मान, गुण, झुकाव, सफलता, आदेश, आथोरीटी पत्र आदी को शासित करता है. आप एक बहुत सक्रिय और भाग्यशाली व्यक्ति बनेंगे. अपने कार्यक्षेत्र की परिधी में आप अपने समकालीनों से बहुत आगे तक जायेंगे और लोग आपको आपकी योग्यता, कार्य स्वतंत्रता और विशेष योगदान के लिए पहचानेंगे. आपका नाम और शोहरत दूर–दूर तक फैलेगी. अगर आपका लग्न मेष है तो आपका लग्न–स्वामी मार्स दसवें घर में स्थित शक्तिशाली हो जाएगा और शुभ परिणाम देगा क्योंकि इस स्थिति से शुभ योग बनता है. आप अपने कार्य और व्यापार आदि में बहुत भाग्यवान साबित होंगे. अगर आपका लग्न मेष या सिंह है तो आपका लग्न स्वामी दसवें घर में दिकबल योग प्राप्त कर लेगा. इस तरह आप अपने अथक परिश्रम और अनुसंधान कार्य से आप कुछ ऐसे विषयों पर प्रकार डालेंगे, आप कुछ ऐसी वस्तुएं खोजेंगे जो छिपी या दबी हुई थी. आपके इस कार्य से आप अपने लिए एक अलग सम्माननीय स्थान बना लेंगे. अगर प्राकृतिक शुभ ग्रह लग्न–स्वामी के समागम में है या प्रभावित का रहा है तो आप एक मशहूर हस्ती बन जायेंगे और अपने प्रशंसनीय कार्यों के लिए जाने जायेंगे. यदि प्राकृतिक अशुभ ग्रह (जब यह दुर्बल हो और अपने घर में भी नहीं हो) लग्नस्वामी के समागम में है या प्रभाव में है तो आप किसी गलत कार्य का शिकार हो सकते है. या फिर बदनाम, अपमानित हो सकते है.

द्वितीय भाव

आपकी कुंडली में द्वितीय स्वामी चतुर्थ घर में स्थित है, जिसे सुखों का गृह कहते है. इसके अलावा यह घर मकान, संपत्ति, भूमि, अधिकार, वस्त्रों, कपड़ों, सुगंध आभूषण, माता, शिक्षा, सुविधायें आदि पर शासन करता है और अगर उचित हुआ तो खेती–बाड़ी की वस्तुए, मवेशियों तथा पालतू जानवरों पर भी शासन रखेगा. यह स्थिति द्वितीय स्वामी के लिए अनुकूल है और आप इनमें से कई विषयों में भाग्यशाली बनेंगे. आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और आप परिवार कि धन संपत्ती में हमेशा इजाफा होगा. अगर द्वितीय स्वामी प्राकृतिक शुभ ग्रह के संयोग में है या प्रभाव में है तो आपका परिवार शांत और सुखी परिवार बनेगा. मगर, यदि द्वितीय स्वामी प्राकृतिक अशुभ ग्रह के संयोग में है या प्रभाव में है तो सब कुछ विपरीत रहेगा. आपके पास शांति और सुख का अभाव रहेगा. आप माताजी के स्वास्थ और कुशलता को देखभाल की जरूरत पड़ सकती है़ क्योंकि द्वितीय स्वामी दसवें घर को प्रभावित करता है अतः आप फलदायक कार्यक्षेत्र के विषय में बड़े भाग्यशाली बनेंगे. अगर चतुर्थ स्वामी भली प्रकार से स्थित है और मार्स भी मज़बूत है तो आपके पास बहुत सी भौतिक संपत्ति होगी. अगर चतुर्थ स्वामी भली प्रकार स्थित है और वीनस भी मज़बूत है या प्राकृतिक शुभ ग्रह के साथ योग में है तब आपके पास आकर्षक गाड़ियां होगी और आप अपना जीवन आराम और अंदाज के साथ बितायेंगे.

तृतीय भाव

आपकी कुंडली में तीसरा स्वामी आठवें घर में स्थित है, जो कि आयुष का गृह कहलाता है. यदि आपका लग्न सिंह है तो आंठवे घर के अंदर तीसरा स्वामी शक्तिशाली बनेगा और अगर आपका लग्न कन्या या मीन है तो तीसरा स्वामी आठवें घर में स्थित होने पर अपनी राशी में आ जाएगा. मगर यदि आपका लग्न किसी दूसरी राशी में गिरता है तो तब तक की आठवां स्वामी भली प्रकार स्थित नहीं है, तब तक यह स्थित आपके छोटे सहोदर आदि की कुशलता के लिए उपयुक्त नहीं है और इस्से आपको दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम प्राप्त होंगे जैसे कि आपके साथ कोई आभाग्यपूर्ण हादसा होने की

संभावनायें ज़्यादा बनेगी जिसके कारण आपको ज़्यादा सावधान और सतर्क रहना चाहिए. अगर किसी प्रकार से प्राकृतिक शुभ ग्रह आठवें घर में स्थित है या प्रभाव दे रहा है तब परेशानियों की तीव्रता कम हो सकती है. तीसरा स्वामी आंठवे स्थान पर साहसी शैतान मिजाज़ देता है इससे रोमांचक जोखिम भरे कार्यों के प्रति आपका लगाव बनेगा और इससे व्यक्ति को घातक हाथियारो के साथ खेलना लुभाता है. उपरोक्त सभी आदतों से व्यक्ति के लिए गंभीर हादसों का खतरा बन जाता है. वैसे इन आदतों का एक अच्छा पक्ष भी है आप साहसी सक्रिय और बहादुर बनेंगे. शायद आप सक्रिय सेवा में बेहतर प्रदर्शन करेंगे और अपने उल्लेखनीय कार्यों से आप अचानक ही आकर्षण केन्द्र बन जायेंगे.

चतुर्थ भाव

आपकी कुंडली में चतुर्थ स्वामी दसवें गृह में स्थित है जो कि कर्म गृह कहा जाता है. इस स्थिती से चतुर्थ स्वामी स्वयं अपने ही गृह पर प्रभाव देता है. इस कारण आप चौथे घर से जुड़े सभी विषयों में आप भाग्यशाली बनेंगे. चौथे घर से जुड़े हुए गुण हैं–माता, विद्या, भूमि और इमारत, वाहन, खेती–बाड़ी और कृषिक्षेत्र, खनिज आदी है. अगर चन्द्रमा भली प्रकार से स्थित है तो आप अपनी माताजी से ढेर सारी खुशियां हासिल करेंगे. यदि मरक्यूरी भली प्रकार से स्थित है तो आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे. यदि मार्स भली प्रकार से स्थित है तो आपके पास प्रॉपरटी वगैरह होगी और आप रियल इस्टेट के व्यापार द्वारा अपना भाग्य कमायेंगे. यदि सैटर्न सही ढंग से मौजूद है तो शायद आपके कार्यक्षेत्र का सुरंग, धातू और या खेती–बाड़ी कृषि आदी से कुछ न कुछ संपर्क जुड़ेगा. अगर वीनस सही ढंग से मौजूद है तब आप अपने वाहन आदी के विषय में भाग्यशाली बन जायेंगे और शायद आपके कार्यक्षेत्र का परिवहन आदी से कोई तार जुड़ेगा. अगर किसी प्रकार से चतुर्थ स्वामी किसी प्राकृतिक अशुभ ग्रह के संयोग में है या प्रभाव में है और यह किसी भी प्राकृतिक शुभ ग्रह के संयोग का प्रभाव में नहीं है (इस बीच दसवां स्वामी भी इस जैसी ही दशा में है) तब शायद आपको ऊंचाई से गिरने का भय बना रहेगा. इस वजह से आपको ऊंचे स्थानों जैसे पहाड की चोटी, नदियों के पुल निर्माणधीन स्थानों और ऊंची जगहो से दूर रहने की विशेष सावधानी बरतनी चाहिए.

पंचम भाव

आपकी कुंडली में पाचवां स्वामी लग्न में स्थित है इसे तनु गृह कहा जाता है. पाचवां स्वामी पूर्व–पून्य, योग्यता, बुद्धि, पद, सगी संतान, नाना या दादा आदी का संकेत देता है. आप इन सभी विषयों में बहुत भाग्यशाली बनेंगे. आप बुद्धिमान और योग्य बनेंगे आप अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे और आपको सम्मानजनक ओहदा प्राप्त होगा. आपके सर्विस में होने की संभावनायें ज़्यादा है यदि सूर्य सही तरह से स्थित है तो ज़्यादा अच्छे परिणामों की आशा की जा सकती है अगर मरक्यूरी भली प्रकार स्थित है तो आपको ऐसे कार्यों में ज़्यादा दिलचस्पी होगी जहां पैसा, पैसा को अपनी ओर खींचता है. और यदि वीनस भली प्रकार स्थित है तो शायद आपको मनोरंजन क्षेत्र अपनी ओर आकर्षित करेगा. अपने बचपन में आप अपने दादा के प्रिय बने रहेंगे और जब आप व्यस्क होंगे तब आपको कर्तव्यनिष्ठ संतान प्राप्त होगी. अगर ज्यूपीटर भली तरीके से स्थित है तो सुखों में इजाफा होगा. यदि आपका लग्न मेष या तुला है तब पांचवा स्वामी लग्न के अंदर शक्ती प्राप्त कर लेगा और आप बहुत ही भाग्यशाली बन जायेंगे. यदि मरक्यूरी भी भली प्रकार स्थित है तो आप बढ़िया शिक्षा प्राप्त करेंगे और आपको छात्रवृत्ति भी मिल सकती है. पर यदि आपका लग्न कर्क है तब पांचवा स्वामी कमज़ोर पड़ जाएगा. हालांकि तब यह स्थिती भौतिक सुख–सुविधायें तो देगी मगर शायद आपको सेहत से संबंधित समस्यायें होगी और आप संतान पक्ष की ओर से भी दुखी से बने रहेंगे. शायद आपको अपना घर छोड़ना पड़ेगा और आप आमदनी के लिए किसी दूर–दराज़ के इलाके में जाकर रहेंगे. शायद कई बार अचानक आपको अपनी नौकरी बदलनी भी पड़ जाएगी.

षष्ठी भाव

आपकी राशी में छठा स्वामी दसवें घर में है. इसे कर्म गृह कहते हैं. इस घर से संकेत मिलते हैं कि आप धन कमाने के लिए अपने व्यापार कि बजाय नौकरी करेंगे. यदि आपका लग्न मीन या वृश्चिक है तब आपको दिशा बल प्राप्त होगा. इससे दसवें गृह में स्थित ग्रह आपको निश्चिंत रूप से सम्मनजनक पद दिलाएगा. अगर दसवें घर में प्राकृतिक शुभ ग्रह स्थित है या प्रभाव दे रहा है, तब आप ऊंची पोजिशन हासिल करेंगे. यदि राहु दसवें में स्थित है, तब भी आपको अपने कार्यक्षेत्र की परिधि में सफलता मिलेगी. यदि दसवां स्वामी भली प्रकार स्थित है, तब और भी बेहतर योग बनेंगे. यदि नंवा स्वामी भी भली प्रकार स्थित है, तब आप दूर के इलाकों या विदेशों में अपना नसीब चमकायेंगे. यदि आपका लग्न सिंह है तब छठा स्वामी सैटर्न होगा जो आपको अचानक आए पतन के बाद धीरे–धीरे ऊपर उठाएगा, आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना होगा. इस तरह के परिणाम केवल तभी सामने आते है जब सैटर्न वक्री होगा या फिर कोई अन्य वक्री ग्रह दसवें या पांचवे या आंठवे या छठे घर में स्थित होगा. अगर कोई प्राकृतिक शुभ ग्रह छठे में स्थित है या प्रभाव दे रहे हैं तब आपका पारितोषीक समय के साथ–साथ बढ़ता चला जायेगा और पांचवे घर में ऐसे ही असर देगा, तब आपकी स्थिती और आपका पद धीरे–धीरे उन्नत होगा जाएगा. यदि शुभ ग्रह की बजाय अशुभ ग्रह का प्रभाव पड़ेगा तब परिणाम कतई विपरीत होंगे और यदि मिले–जुले प्रभाव मिलते हैं तब आपको विशाल मात्रा में उतार–चढ़ाव के अनुभव होंगे और आपका भविष्य परिवर्तनीय और चंचल बना रहेगा.

सप्तम भाव

कुंडली में सातवां स्वामी दसवें घर में बैठा है. इसे करमगृह या कर्मों का घर कहते है. इससे इस बात के संकेत मिलते है कि आप एक सक्रिय व्यक्ति बनेंगे और इसके अलावा अपने कार्य वगैरह के विषय में भी भाग्यशाली बनेंगे. शायद आप स्वयं का व्यापार चलायेंगे या फिर किसी नामी–गिरामी संस्थान में स्थायी रूप से नौकरी करेंगे. अगर आपका लग्न तुला या कर्क में से कोई एक है, तब दसवें घर में आपका सातवां स्वामी कमज़ोर बन जाएगा. यदि आपका दसवां स्वामी भी गलत ढंग से स्थित है या प्रभाव नहीं दे रहा है, तब शायद आप बदनामी और निंदा का शिकार बनेंगे. यदि आपका लग्न मिथुन है तब दसवां स्वामी जो है वह स्वयं के दसवें घर में मौजूद होगा. जबकि अगर आपका लग्न धनु है, तब आपका सातवां स्वामी दसवें घर में शक्ति प्राप्त कर लेगा. इन सभी मामलों में आप बेहद सुखी बनेंगे, क्योंकि आप मंगलकारी पांच महापुरूष योग के लाभदायक परिणाम से भाग्यशाली बनेंगे और जीवन में भली–भांति स्थिर होकर रहेंगे. शायद आपका जीवनसाथी आपके कार्यक्षेत्र की परिधी से आएगा. वह आपकी तमन्नाएं पूरी करने में सक्रिय रूप से आपको सहयोग देगी. यदि मार्स या सूर्य भी दसवें घर में मौजूद है तब आप एक शक्तिशाली पद अपने लिए सुरक्षित कर लेंगे, क्योंकि ग्रह आपको दिशा शक्ति देंगे. अगर प्राकृतिक शुभ दसवें घर में है या इसे असर दे रहा है, तब आप प्रशंसायोग्य और लक्ष्यधारी व्यक्ति बनेंगे. आप इंसानी स्वभाव को भली–भांति समझ सकेंगे, शायद आप मार्केटींग क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करेंगे और एक योग्य मध्यस्थ के रूप में चमकेंगे.

अष्ठम भाव

नवम भाव

आपकी कुंडली में नौवां स्वामी चौथे घर में मौजूद है. इसे सुखगृह या सुखों का घर कहते है. क्योंकि त्रिकोण स्वामी केंद्र गृह में स्थित है अतः आपका नौवां स्वामी समयनुसार योग कारक बन गया है. इससे आपको भौतिक समृद्धी मिलेगी. आप बहुत सक्रिय और बहुत भाग्यशाली होंगे. यह स्थिती आपको एप्लिकेशन ओरियेंटेड क्षेत्र में उच्च शिक्षा भी दिलाती है अच्छे परिणामों में और भी वृद्धी होगी यदि

आपका मरक्यूरी भी भली प्रकार स्थित है. चूंकि चौथा घर लाभ की ओर संकेत देता है और नौवां घर विदेशों पर शासन करता है, इसलिए शायद आप विदेशी कारणों से उत्तम लाभ कमायेंगे. यदि वीनस भी भली तरह स्थित है तब आधुनिक पोशाकें या कलात्मक आभूषणों का क्षेत्र आपके कारोबार के लिए उपयोगी बनेगा. अगर आपका लग्न कुंभ या सिंह है तब आपका जो नौवां स्वामी है वह आपका चौथा स्वामी भी बन जायेगा इससे आप मंगलकारी पांच महापूरूष योग के लाभदायक परिणामों से फलित होंगे और आपकी भौतिक सुख–समृद्धि तथा धन–दौलत हमेशा बढ़ती चली जाएगी. हालांकि इस स्थिती से आपके पिताजी को लंबी आयु प्राप्त होगी मगर शायद आपकी माताजी किसी व्याधी से पीड़ित रहेंगी. यदि चंद्रमा भली तरह स्थित नहीं है. यह स्थिती आपको किताबों का प्रेमी बनाती है और इसके अलावा शायद यह स्थिती आपको रुचिपूर्ण वस्तुओं का उत्साही संग्रहकर्ता भी बनाएगी. दरअसल यह सब उस ग्रह पर निर्भर करता है जो आपके चौथे घर को प्रभावित करेगा. शायद आप चौथे घर से मिलनेवाले कई विषयों (जैसे गृह निर्माण (मार्स–मंगलग्रह), शिक्षा संस्थान, किताबें (मरक्यूरी – बुध ग्रह) खेती–बाड़ी/कृषी (ज्यूपीटर – बृहस्पति ग्रह) वाहन/परिवान (वीनस) खनिज/धातु पदार्थ (सैटर्न – शनि ग्रह) आदि) में भाग्यशाली बनेंगे.

दशम भाव

आपकी कुंडली में दसवां स्वामी आपके दसवें घर में है. इसे कर्मगृह कहते है. यह दसवें स्वामी को प्राप्त होनेवाली सबसे उत्तम संभावित स्थिती है और आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे. आप सक्रिय स्वभाववाले लक्षदारी व्यक्ति बनेंगे. आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे आप मानसिक शांति का आनंद लेंगे आप अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय और अपना ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान अपने काम पर अपने जीवन की प्राथमिकताओं और खुशियों पर अपने वादे पूरे करने आदी में लगाएगे. आप बजाय धन–दौलत जमा करने के अपनी एक अलग पहचान बनाना और अमीर छवि कायम करना पसंद करेंगे. यदि आपका दसवां स्वामी तारा–ग्रह (मार्स या मरक्यूरी या जूपीटर या शनि या वीनस) है तब आपका लाभदायक पांच महापूरूष योग के मंगलकारी परिणाम प्राप्त होंगे. समाज में आप ऊंचा मान–सम्मान प्राप्त करेंगे. अगर आपका सूर्य भी भली प्रकार कायम है तब यह निश्चित है कि आपका बहुत उच्च पद हासिक करेंगे और आपकी पहचान राष्ट्रिय स्तर पर होगी. यदि चंद्रमा भली तरह से कायम है तब आप बहुत प्रसिद्ध हो जायेंगे. यदि आपके चौथे घर में कोई कुदरती शुभ ग्रह स्थित है या प्रभाव दे रहा है तो आपका धन और आपकी प्रॉर्टीयां हमेशा बढ़ती ही जाएगी. मगर यदि आपके चौथे घर में कोई कुदरती अशुभ ग्रह स्थित है या प्रभाव दे रहा है तो आपको कुछ समस्यायें झेलनी पड़ेगी शायद कुछ लोग आपकी साफ–सुथरी छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे.

एकादशम भाव

आपकी कुंडली में ग्यारहवां स्वामी छठे घर में है. इसे रोग गृह कहते है. यदि आपका लग्न मिथुन या धनु है तो ग्यारहवां स्वामी स्वयं के घर में स्थापित रहेगा और इससे आपको लाभकारी परिणाम हासिल होंगे. अगर आपका लग्न मीन है तो आपका ग्यारहवां स्वामी आपके बारहवें स्वामी के जैसा बरताव देगा और चूंकि यह छठे घर में मौजूद है अतः यह आपको मंगलकारी विपरीत राज योग के परिणम देगा. वरना यह स्थिती बहुत ज़्यादा अनुकूल नहीं है. हालांकि यह स्थिती प्रतियोगी परिक्षाओं में आपको सफलता दिलाएगी मगर आप शायद किसी जगह नौकरी करेंगे और आपकी आय एक हद के अंदर रहेगी. क्योंकि ग्यारहवां घर मित्रों का घर है और आपका छटा घर शत्रुओं का घर है, इससे शायद आपके कुछ मित्र अंदर ही अंदर आपके विरोधी बन जायेंगे. यदि छठा स्वामी भले ढंग से स्थित नहीं है या कोई कुदरती अशुभ ग्रह छठे घर में मौजूद है या इसे प्रभाव दे रहा है तब शायद आप किसी ऐसी व्याधी से पीड़ित होंगे जिसका केंद्र ढूंढना कठिन होगा या फिर जिसका इलाज कठिन होगा. इस योग में यदि राहु नहीं है तो फिर शायद आप किसी बीमारी से पीड़ित रहेंगे वरना शायद आपको कुछ अनचाहे सहयोगी मिलेंगे आपके अनचाहे या काल्पनिक सपने होंगे और शायद आपको कोई बुरी लत

भी लग जाएगी क्योंकि चौथे घर से आपका ग्यारहवां घर जो है वह आठवां बनता है इस बीच चौथे घर से आपका छठा घर जो है वह तीसरा बनता है अतः आपको अपनी माताजी के स्वास्थ और कुशलता की ओर ध्यान देने की जरूरत होगी और भी ज़्यादा यदि आपका चंद्रमा भले स्वभाव का नहीं है. यदि मार्स भले ढंग से स्थित नहीं है तब किसी हानिकारक कारण या कष्टदायक हादसे की वजह से आपकी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा लुट जाएगा.

द्वादशम भाव

आपकी कुंडली में बारहवां स्वामी छठे घर में विराजमान है. इसे रोग गृह कहते हैं. यह स्थिति भौतिक लाभों की प्राप्ती के लिए उपयुक्त है. इस स्थिती में त्रिका स्वामी जो है वह अन्य त्रिका गृह में मौजूद है और इससे यह स्थिती मंगलकारी विपरीत राज योग में वृद्धी देती है. यह योग आपको अचानक ऐसे कारणों से लाभ देता है जहां से आपने कभी आशा भी नहीं की होगी. मगर आपको यह लाभ केवल तब हो मिलेगा जब आप अपने घर या देश के दूर के स्थान पर होंगे. इसके अलावा इस योग में एक अजीब सा दोष भी है और इस दोष के कारण शायद आपके कुछ रिश्तेदार गुप्त रूप से आपके दुशम बन जायेंगे और शायद आपके आसपास कुछ अन्य शत्रु भी होंगे जो हमेशा आपको नुक्सान देना चाहेंगे. आपके अंदर किसी भी अवसर का तुरंत सदुपयोग करने की विशेष गुण होगा मगर अपना मकसद पूरा करने के लिए आप केवल कुछ अवसरों का प्रयोग कर सकेंगे जो की बाद में आपकी ज़िम्मेदारियां बन जाएगी. शायद आपको बड़े खतरे उठाने में विशेष आनंद आता हो परंतु इस कारण आप हमेशा तनावग्रस्त बने रहेंगे. हालांकि आमतौर पर आपकी सेहत अच्छी बनी रहेगी मगर जरूरत से ज़्यादा तनाव आपको बिस्तर पकड़ लेने पर मज़बूत कर सकता है और शायद थोड़े अरसे के लिए आपको अस्पताल भी जाना पड़ेगा.

यदि छठे घर में कोई कुदरती शुभ ग्रह मौजूद है या इस पर अपना असर दे रहा है शायद तब आप बहुत फिजूलखर्च बन जायेगा मगर अगर कोई कुदरती अशुभ ग्रह आपके छठे घर में स्थित है या इस पर अपना प्रभाव दे रहा है तब शायद आपको भारी घाटे उठाने का भय बनेगा.

भावों में ग्रहों की स्थिती का फल

रवि

सूर्य आपके दसवें घर में विराजमान है. आप जन्म से ही भाग्यशाली बनेंगे क्योंकि इस स्थिती में सूर्य को दिशा शक्ति प्राप्त हो जाती है. आप अपने कार्यक्षेत्र के विषय में भाग्यशाली बनेंगे. आपको उच्च अधिकारियों से लाभ हासिल होंगे. इसके अलावा आप सरकारी कारणों से भी लाभ प्राप्त करेंगे. आपका उठना बैठना रईस और कुलीन लोगों के साथ बनेगा और आपकी छवी हमेशा बेदाग बनी रहेगी उत्तम योग में भी अभी और भी बढ़त होने की संभावना है अगर आपका लग्न कर्क या वृश्चिक है तब आपका दसवां स्वामी शक्ति हासिल कर लेगा या स्वयं के घर में स्थित होगा. अगर आपका लग्न कर्क है तो आप किसी बड़ी आर्थिक संस्था में नियुक्त होंगे. और यदि आपका लग्न वृश्चिक है तो आपको नामी–गिरामी संस्था में राज्यपाल का पद प्राप्त होगा. मगर यदि आपका लग्न मकर है तो कमज़ोर सूर्य के कारण आपको बहुत से तबादलों वाली नौकरी मिलेगी या आपके कार्यक्षेत्र में बहुत से परिवर्तन आयेंगे. यदि वीनस या शनि भले ढंग से कायम है तो आप बीमा संस्थान प्रोविडेंट फंड आदी के क्षेत्र में उत्तन भविष्य की आशा कर सकते हैं या फिर आप कर निर्धारण या कर सलाहकार के रूप में बेहतर प्रदर्शन करेंगे. सभी तरह के लग्न के मामलों में इस स्थिती से आप आदर्श ऊंचे बनेंगे और आप

अपना लक्ष्य निर्धारत करके रखेंगे. आपके उद्देश्य हमेशा साफ सुधरे रहेंगे और आपको किसी भी तरह के गैरकानूनी और दुष्ट कार्य से सख्त घृणा होगी. उच्च अधिकारी आपकी सराहना करेंगे और आपके मित्र और सहयोगी आपकी भूरी–भूरी प्रशंसा करेंगे और आपको अपने में से एक समझेंगे.

बुध

मरक्यूरी आपके दसवें घर में है. आप एक बैचेन आत्मा बनेंगे. शायद आप हमेशा अपने कष्टों और परेशानियों के कारण झल्लाए हुए से रहेंगे. यदि मरक्यूरी बलवान है या स्वयं के घर में है तब आप लाभदायक पांच महापूरूष योग के मंगलकारी फलों का आनंद लेंगे और अपने जीवन में भली प्रकार स्थापित हो जायेंगे यह तब ही होगा जब यदि आपका लग्न कन्या या धनु है और ऐसे मामलों में शायद आप एक ही समय में दो पदों पर कार्यरत रहेंगे. अगर राहु भी इसके साथ है या एंग्युलर स्थिती में है (आपके लग्न में या चौथें या सातवें घर में) तब आप शिक्षण से जुड़ी श्रेष्ठता हासिल करेंगे और शायद कम्प्युटर से जुड़ी तकनीकी जानकारियों में उस्तादी प्राप्त कर लेंगे. यह स्थिती उत्तम और सामान्य कमीशन एजेंसी में सफलता हासिल करने के लिए अनुकूल है. अगर चंद्रमा इसके साथ है या इसे प्रभाव दे रहा है तो आपका रुझान कला की ओर रहेगा. यदि जूपीटर मरक्यूरी के साथ है या इसपर असर दे रहा है तो आप एक विद्वान व्यक्ति बनेंगे और शायद आपका बहुत सी भाषाओं पर समान अधिकार होगा. आपकी साहित्य में रूची बनेगी और शायद आप साहित्य या विद्धता संबंधी कार्य में व्यस्त रहेंगे वरना शायद आप अपनी संपादकीय योग्यता के बल पर प्रकाशन आदी का व्यापार करेंगे. अगर आपका लग्न मिथुन है तब दसवें घर में कमज़ोर हो चुका मरक्यूरी आपके कार्यक्षेत्र में बहुत से परिवर्तन लाएगा अगर आपकी कुंडली में कुछ बेहतर योग न हों. यदि आठवां स्वामी इसके साथ है या इसे प्रभाव दे रहा है तो शायद आप ज्योतिषीशास्त्र में महारत हासिल करेंगे.

शुक्र

वीनस आपके आठवें घर में स्थित है. इससे आप बहुत से विषयों में भाग्यशाली बनेंगे. आपका जीवनसाथी धनी और कुलीन परिवार से आयेगा और आपका परिवारिक जीवन सुखी, शांतिमय, आनंदित और सुख–समृद्धी से भरपुर बनेगा. आपकी सेहत अच्छी रहेगी, आपको किसी गंभीर शल्य चिकित्सा या आपरेशन आदी से गुजरने की जरूरत नहीं होगी, आपको कोई दुर्घटना नहीं सहनी पड़ेगी आप कष्टदायक समस्याओम से मुक्त रहेंगे और आपको कोई मुकदमा नहीं लडना पड़ेगा. आपको पैतृक संपत्ति द्वारा बहुत से लाभ हासिल होंगे और आपको कुलीन, रईस लोगों के द्वारा बड़ी मात्रा में फायदे प्राप्त होंगे. अगर आपका लग्न सिंह है तो वीनस आठवें घर में शक्ति प्राप्त कर लेगा. इस योग से आपको अपने चारो तरफ केवल सुख और समृद्धि मिलेगी. यदि आपका लग्न तुला या मीन में से कोई है तो आप लाभदायक विपरीत राज योग के आनंदमय परिणाम प्राप्त करेंगे. इससे आप किसी गंभीर कार्य या रणनीती के चलते अचानक धनवान बन जायेंगे. वैसे यदि आपका लग्न कुंभ है और यदि मरक्यूरी भले ढंग से स्थित नहीं है तब शायद आप अपने माता–पिता के विषय में भाग्यशाली नहीं बनेंगे. शायद वे दोनों ही अपनी जिम्मेदारियों को निभानेवाले नहीं होंगे या फिर वे आपकी तरफ से लापरवाह रहेंगे. आप अपने जीवन में उचित रूप से सैटल हो जायेंगे और अपनी बेदाग छवि का आनंद उठायेंगे. आपकी आयु लंबी होगी और अपने अंतिम समय में आप अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और परिवारवालों के साथ शांत और समृद्ध वातावरण में बिना किसी तकलीफ मृत्यू प्राप्त करेंगे.

मंगल

क्योंकि मार्स आपके चतुर्थ गृह में मौजूद है (यदि चौथा स्वामी भली प्रकार जमा नहीं है) तो आपके अपने माता–पिता के साथ संपत्ति संबंधी विषयों को लेकर कुछ असहमती सी रहेगी. शायद किसी

गंभीर कार्य में लगाया गया आपका धन जाएगा या फिर निवास स्थान पर आग लगने या चोरी आदी के कारण आपको भारी घाटे उठाने पड़ेंगे. अगर आपका लग्न मेष है तो मार्स कमज़ोर पड़ जाएगा, तब विपरीत परिणामों की संख्या में वृद्धी होगी. हालांकि इस स्थिती से इतना कुछ होने के बाद भी आप एक धनवान व्यक्ति बने रहेंगे और आपके पास भारी संपत्ति होगी. यदि चन्द्रमा भी मार्स के साथ है तो आप चन्द्र–मंगल योग के सुखद परिणाम प्राप्त करेंगे. साथ ही आप उपयुक्त साधनों द्वारा धन दौलत जमा करेंगे. यदि आपका लग्न तुला है तब मार्स चौथे घर में शक्तिशाली हो जाएगा, तब आप बहुत ज़्यादा भाग्यशाली बन जायेंगे और पांच महापुरूष योग के परिणाम प्राप्त करेंगे. इससे आपकी शिक्षा अच्छी होगी आपके पास धन–संपत्ति होगी आपका चरित्र अच्छा बनेगा, आप अपने वतन के विषय में बहुत भाग्यशाली बनेंगे और सुख व सुविधाओं के साथ लंबी आयु का आनंद उठायेंगे. अगर आपका लग्न मेष है और कमज़ोर मार्स नीच–भंग प्राप्त कर लेगा तो आप धनवान व्यक्ति बनेंगे तथा अपना जीवन उत्तम तरीके से बसायेंगे. यदि ज्यूपीटर या वीनस भी चौथे घर में स्थित है या प्रभाव दे रहे है तो आप सुखद जीवन बितायेंगे, मानसिक शांति का आनंद लेंगे और पूरी तरह से संतोष प्राप्त करेंगे.

गुरु

ज्युपीटर आपके दसवें घर में मौजूद है. आप अति–अतिभाग्यशाली बनेंगे क्योंकि यह जीवनभर दैविक शक्ति की कृपा द्वारा आपकी सुरक्षा करेगा. चूंकि ज्युपीटर प्रभाव देगा आपके दूसरे घर को (भाषा, परिवार, धन) आपके चौथे घर को (मानसिक शांति, निवास लाभ) और आपके छठे घर को (रिश्तेदार, सेहत आदि) अतः आप उपरोक्त सभी विषयों में भाग्यशाली बनेंगे. इसके अलावा आप अपनी गृह स्थिती आपका दसवां घर (कार्य, अच्छी छवि, सम्मान, विश्वास आदि) के विषय में भी अतिभाग्यशाली बनेंगे. आप अपने समुदाय या अपने क्षेत्र के महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेंगे और अपने देश (वह स्थान जहां आपका जन्म हुआ होगा या जहां रहकर आप पले–बढे होंगे) में रहकर मज़बूती और स्थिरता के साथ बुलंदी के शिखर पर पहुंच जायेंगे. यदि आपका ज्युपीटर शक्तिशाली है या फिर स्वयं के घर में स्थापित है और यदि आपका लग्न मिथुन या तुला या मीन है तब आप लाभकारी पांच महापुरूष योग के आनंदमय परिणामों का फल प्राप्त करेंगे और अपने जीवन में भली प्रकार स्थापित हो जायेंगे. जूपीटर आप पर सुख और समृद्धी की बरसात करेगा. आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर रहेगा. आप अपने माता–पिता के विषय में भाग्यशाली बनेंगे और आपके माता–पिता लंबी आयुवाले बनेंगे. यदि किसी प्रकार से आपका लग्न मेष है, तब दसवें घर में कमज़ोर बन गया ज्युपीटर शायद आपके कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन देगा मगर यदि शनि भली प्रकार स्थित है या वीनस या चंद्रमा जो है उनमें से कोई भी एक जूपीटर के साथ है या इसपर असर डाल रहे है तो स्थिती में उल्लेखनीय रूप से सुधार आयेंगे.

शनि

सैटर्न आपके छठे घर में स्थित है. इससे आप कई विषयों में भाग्यशाली बनेंगे. शायद आप अपना व्यापार अदि करने की बजाय नौकरी करेंगे, जिससे आपको बहुत से लाभ मिलेंगे. इसके अलावा आप हमेशा अपने शत्रुओं को पराजित करेंगे. यदि आपका लग्न, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या या कुंभ है, तब आप फलदायक विपरीत राज योग के परिणमो का आनंद लेंगे. यदि आपका लग्न सिंह है तब आप प्रतियोगी परिक्षाओं में सफल बनेंगे या प्रतियोगीताओं वगैरह में आपकी जीत होगी. यदि आपका लग्न वृषभ है तब आप अपनी नौकरी में स्थायी बन जायेंगे, क्योंकि सैटर्न छठे घर में शक्ति प्राप्त कर लेगा. मगर यदि आपका लग्न वृश्चिक है तब सैटर्न छठे घर में कमज़ोर बन जायेगा और (यदि मार्स (मंगलग्रह भी भली तरह स्थिर नहीं है) आप किसी रोग से ग्रस्त हो जायेंगे) आप स्वादिष्ट खाने के शौकीन होंगे और ज़्यादा घर से बाहर रहने के कारण और समय पर भोजन नहीं लेने की आदत से आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं. इसके अलावा आपका कोई कर्मचारी आपको शायद धोखा देगा और आपके लिए नुकसान का कारण बनेगा.

यदि छठा स्वामी भली प्रकार स्तिथ नहीं है और राहु इसके करीब है, तब शायद किसी ऐसे रोग से पीड़ित होंगे जिसका रोगल क्षण पकड़ पाना मुश्किल होगा और अगर केतू इसके करीब है तब आपको कोई ऐसी बीमारी होगी जिसका इलाज मुश्किल होगा. यदि मार्स सैटर्न के करीब है (इस बीच उनमे से कोई भी शक्तिशाली नहीं है या अपने गृह में नहीं है) तब आपको दुर्घटनावश घायल होने का खतरा बना रहेगा.

चन्द्र

आपके लग्न में चन्द्रमा स्थित है. इससे आपकी कल्पनाएं फलदायक तथा स्वभाव सेंसीटीव बनेगा. शायद आप कुछ चैन रहित, अस्थिर, डरने वाले और बार–बार बदलनेवाले स्वभाव के बनेंगे. आपको अंतर्ज्ञान संबंधी उपहार प्राप्त होगा और आपको प्रसिद्धि और अपने जीवन में बहुत से परिवर्तन देखने को मिलेंगे. अगर चन्द्रमा किसी जलीय राशी में स्थित है (जैसे मीन, कर्क या वृश्चिक) या यह सूर्य के नज़दीक है तब आप कुछ संवेदनशील बनेंगे मगर यदि यह सूर्य द्वारा प्रभावित हो रहा है तो आप भावुक बन जायेंगे. अगर चन्द्रमा अस्थिर राशी में है (जैसे कर्क, तुला, या फिर मकर) तो इससे आपको बार–बार बदलनेवाला मिजाज़ प्राप्त होगा. और आपको घूमना–फिरना पसंद होगा. अगर चन्द्रमा, कर्क राशी में स्थित है तो आप धनवान बन जायेंगे. अगर ज्यूपीटर भी इसके साथ है या इसके प्रभाव में है तब तो और भी बेहतर स्थिती होगी. यदि चन्द्रमा स्थिर राशी में मौजूद है (जैसे वृषभ, सिंह, वृश्चिक या मेष) या सैटर्न के साथ है या प्रभाव में है तो इससे आप अपने विचार के पक्के और हठी बनेंगे तथा परिवर्तनों से जल्द क्षुब्ध हो जायेंगे. अगर चन्द्रमा राशियों की अदला बदली या नक्षत्र की अदला बदली में मिला है तो इससे शक्ति प्राप्त होगी तथा आप उद्देशयपूर्ण और साधनसंपन्न बन जायेंगे. अगर चन्द्रमा, राहु या केतू के नज़दीक है तो आप अपनी कमज़ोर सेहत से परेशान रह सकते है और आपके विचार हमेशा कन्फ्यूज्ड और बार–बार बदलने वाले से रहेंगे.

राहु

क्योंकि राहु आपके बारहवें घर में मौजूद है अतः यदि आपका बारहवां स्वामी भले ढंग से स्थित है या फिर राहु किसी कुदरती शुभ ग्रह के साथ है या प्रभाव में है तब आप भाग्यशाली बनेंगे. अगर राहू किसी वक्री ग्रह के नक्षत्र में स्थित है अतः जब नक्षत्र–स्वामी ग्रह जब राहु को पार करेगा तब आपके साथ दुर्घटनाएं या कोई अन्य कष्टकारी हादसा होने की काफी संभावनायें हैं. ऐसे मामलों में शायद नौबत बीमार होकर चारपाई पकडने तक आ जाएगी या फिर बिना कोई सुरक्षात्मक उपाय के आपको दूरवर्ती स्थान पर जाना पड़ेगा. अगर राहु केतू के नक्षत्र में स्थित है तब शायद आपके कार्यकर्ता या सहयोगी आपके शत्रु बन जायेंगे और आपको उनसे भय बनेगा. यदि कुदरती शुभ ग्रह राहु के साथ है या इस पर अपना शुभ असर दे रहा है तब शायद आप बहुत सी यात्रा करेंगे और किसी दुरवर्ती स्थान पर जायेंगे या फिर शायद विदेश तक जायेंगे. मगर यदि राहु दो या दो से अधिक कुदरती अशुभ ग्रहों के प्रभाव में है तब आपको जीवन एक से अधिक बार जबरदस्ती विस्थापित किया जाएगा. अगर मार्स और शनि दोनों राहु के संयोग में है या इस पर अपना प्रभाव दे रहे हैं तब शायद आपके साथ गंभीर दुर्घटना होगी. यदि सूर्य राहु के काफी करीब मौजूद है और कोई भी कुदरती शुभ ग्रह इसके साथ नहीं है या इस पर अपना असर नहीं दे रहा है तब आप बदनामी और लोक निंदा का शिकार बनेंगे. अगर इसकी बजाय चंद्रमा स्थित है तब शायद आप किसी ऐसी व्याधी से पीड़ित होंगे, जिसका केंद्र ढूंढ पाना मुश्किल होगा.

केतु

यूरेनस आपके छठे घर में स्थित है. आपको कुछ अशुभ परिणामों के अनुभव सहन करने पड़ेंगे.

हालांकि आप अपने तरीके, (जो कि सत्यधर्मावलम्बी नहीं होंगे) अपनाकर शत्रुओं पर विजय हासिल कर लेंगे, आपके कुछ रिश्तेदारों का आपके प्रति अनचाहा बरताव रहेगा और आपकी बड़ी नाराजगी का कारण बनेगा. आपके आधीन रहनेवाले जन या कर्मचारी शायद बहुत हठधर्मी या बहुत मांग करनेवाले बनेंगे. उनकी ये आदतें आपकी परिशानियों का कारण बनेगी. शायद के लोग अपनी सहायता देने से इन्कार करके आपके लिए असुविधा, बैचेनी और यहां तक की नुक्सान की वजह बनेंगे. यदि प्राकृतिक शुभ ग्रह इसके साथ है या प्रभाव दे रहा है. तब शायद आप इन सब समस्याओं के साथ कोई मिलनसार उपाय खोजने योग्य बनेंगे. मगर यदि कोई प्राकृतिक अशुभ ग्रह इसके साथ है या प्रभाव दे रहा है, तब दशा बद से बदतर होती जाएगी और इससे आपकी सेहत पर प्रभाव पड़ सकता है. यदि यूरेनस कुंभ या मिथुन या तुला राशि में होगा तब यह बेहतर परिणाम देगा.

इन्द्र

क्योंकि युरेनस आपके बारहवें घर में मौजूद है आपको अनपेक्षित वातावरण में बहुत सारी अनपेक्षित समस्याओं से गुजरना पड़ेगा. यदि आपका बारहवां स्वामी भली तरह से स्थित नहीं है या कोई कुदरती शुभ ग्रह इसके साथ नहीं है या असर नहीं दे रहा है तब आपकी अजीब और अनपेक्षित शत्रुता बनेगी. अगर कोई कुदरती अशुभ ग्रह इसके साथ है या असर दे रहा है तब कुछ दुष्ट लोग अपने गैरकानूनी कार्यों द्वारा आपको परेशान करेंगे. कुछ विशेष परिणामों की आशा की जा सकती है यदि कोई ग्रह युरेनस से ३ डिग्री २० पर मौजूद है ग्रह के स्वाभाविकता अनुसार यदि यह ग्रह सूर्य है तब आप शायद आप नेत्र रोग से पीड़ित होंगे और शायद आपको सरकारी अधिकारियों और वरिष्ठजनों का क्रोध सहना पड़ेगा. यदि यह ग्रह चंद्रमा है तब शायद आप वाहन से गिर पड़ेंगे या फिर आसामान्य दशा में किसी दुरवर्ती स्थान या विदेश में किसी तीसरे व्यक्ति को दुर्घटनावश चोट देने के कारण अवरोध देखने पड़ेंगे. यदि मार्स है तब आपको अग्नि या विद्युत झटके का भय बनेगा. यदि यह मरक्यूरी है तब आप अपनी लेखनी और प्रकाशन द्वारा पाठको में रोष पैदा कर देंगे. यदि यह ज्युपीटर है तब आप धार्मिक मतों को मानने से इन्कार कर देंगे और शायद इस कारण से आपका बहिष्कार कर दिया जाएगा. अगर वीनस है तब आपपर गुप्त संबंधो का संदेह बनेगा. यदि शनि है तब आपको किसी तेज़ धार वस्तु से या ऊंचाई से गिरने के कारण चोट लगने का भय होगा. यदि यह राहु या केतू में से कोई एक है तब आपको किन्हीं कारणों से नुक्सान होगा. कष्ट किसी प्रकार से कम हो सकते है यदि युरेनस बारहवें से दूर है या जूपीटर इसके साथ है या प्रभाव दे रहा है.

वरुण

नेपच्यून आपके ग्यारहवें घर में मौजूद है. आपमें कुछ विलक्षण और अज्ञात आर्कषण होंगे. आपके जान पहचान वाले भी शायद भटकी हुई गतिविधियों वाले जने होंगे. जो लोग आपको मशवरे देंगे वह स्वयं ही शायद विश्वास योग्य नहीं होंगे. आपका जीवनसाथी शायद आपके दोस्तों के बीच बहुत सी गलतफह्मियां पैदा करेगा. हालांकि अपने सहयोगियों की भूल–चूक के लिए आप सीधे तौर पर जि्म्मेदार नहीं होंगे मगर यह बात निश्चिंत है कि कुछ उत्साही दर्शकों की त्यौरियां यह सब देखकर चढ़ जाएंगी, और आप भी शहर भर में चर्चा का विषय बन जायेंगे. अगर किसी तरह से ग्यारहवां स्वामी भले तरीके से मौजूद हैं या कोई कुदरती शुभ ग्रह इसके साथ है या इसपर अपना असर दे रहा है तब स्थिती में बेहतरी के लिए उल्लेखनीय सुधार आयेंगे. मगर यदि आपका ग्यारहवां स्वामी भले ढंग से स्थित नहीं है या एक से ज़्यादा कुदरती अशुभ ग्रह इसपर अपना असर दे रहे हैं तब हालात बद से बदतर होते जायेंगे और आपको शायद अपने जीवनसाथी या अपने मित्रों द्वारा विश्वासघात और धोखेबाजी से दुखी होना पड़ेगा. यदि आपका वीनस भी केवल किसी कुदरती अशुभ ग्रह के प्रभाव में है तब आपका यह जो दुखद इतिहास होगा वह सारे शहर के लिए एक मसालेदार किस्सा बन जायेगा और बार–बार दोहराया और सुना जाएगा.

रुद्र

क्योंकि प्लूटो आपकी कुन्डली में दसवें भाव में स्थित है, आप बहुत ज्यादा असुरक्षा की भावना से भरे होंगे. हो सकता है कि आपको अपने अधिकारीयों से अपने काम निकलवाने में कठिनाईयां आयें, और आपके द्वारा किये गये अच्छे काम को भी आप नज़रों में नहीं ला पायेंगे, शायद आपके अधिकारी या आपके सहकर्मी इसकी वजह बनेंगे. हो सकता है कि जब आप अपने काम के शुभ फल का इंतज़ार कर रहे होंगे तो आपके द्वारा किया गया सारा योगदान आपके अधिकारी भुला दें. इससे आपको सदमा पहुंचेगा, और हो सकता है आप खुद के लिये काम करना शुरु करें. चाहे आपको नीचे से ही क्यों न शुरु करना पड़े, आपके लिये बेहतर यही है कि आप खुद के लिये ही कोई काम करें. प्लूटो आपकी धूल से ऊपर उठने में मदद करेगा और आपके काम–धंधे को आगे बढ़ाने में सहयोग करेगा. अगर प्लूटो के साथ में कोई अशुभ ग्रह है तो यह आपके काम के आगे बढ़ने में रुकावटें डाल सकता है इसके कारण हो सकता है आग, विस्फोट, किसी के षडयंत्र, या सरकारी नीतीयों के कारण आपको नुक्सान पहुंचे. लेकिन अगर आपके दसवें भाव का स्वामी अच्छी स्तिथी में है, या फिर गुरु या शुक्र के साथ में है, या इनकी दृष्टी में है तो आपको अपने काम के क्षेत्र में कम परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, और शुभ फल की प्राप्ती होगी. आप एक लक्ष्य के लिये काम करेंगे और सामाजिक जीवन जियेंगे. आपको समाज में एक पहचान और प्रसिद्धि मिलेगी

जन्म नक्षत्र फल

नक्षत्र फल

आप मृदुभाषी, शुद्ध –हृदय तथा कार्य व्यवहार में पूर्णतः सत्यनिष्ठ होंगे. अवसर की मांग के अनुरूप लोगों से कार्य व्यवहार करने की आपमें स्वाभाविक क्षमता होगी. आप दूसरों पर अनावश्यक ध्यान नहीं देते हैं. आप स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करेंगे और थोड़ा सा भी प्रतिरोध किए जाने पर आपको ठेस पहुंचेगी. आप बातों को गुप्त रखने की कला नहीं जानते. आप आंख मूंद कर अपने प्रियजनों पर भी विश्वास नहीं करते. किन्तु यदि एक बार कोई आपका विश्वस्त व्यक्ति बन जाता है तो वह सरलता से आपके स्नेह से वंचित नहीं हो पाता.

आप अति उग्र स्वभाव वाले होंगे, तथा चाहे कुछ भी हो जाये आप अपने भीतर की आवाज़ के अनुसार कार्य करेंगे. जिन सिद्धान्तों को आप उचित समझते हैं आप उनको अपनाने का प्रयास करेंगे तथा विषम स्थिति आने पर भी अपनी सम्पूर्ण क्षमतानुसार उस सिद्धान्त पर टिके रहने का समुचित प्रयास करेंगे. आपको किसी भी सन्दर्भ में अपरिक्व निष्कर्ष नहीं निकालने चाहिए. आप ईश्वर भक्त, अन्ध विश्वासी, धार्मिक तथा विधि विधाननुसार रीति–रिवाजों एवं सिद्धान्तों को अपनायेंगे और कट्टर होंगे.

आप जिद्दी तथा महत्वाकांक्षी होंगे. आपकी योजनाओं की सूक्ष्म सी असफलता आपको अत्याधिक व्यथित कर देती है. समस्त २८ नक्षत्रों में से रेवती नक्षत्र में जन्मे लोग ही सर्वाधिक ईश्वर भक्त एवं धार्मिक विचारों वाले होंते हैं. अतः आप लोगों को ही ईश्वर के आशिर्वाद का सर्वाधिक आनन्द मिलता हैं.

शारिरिक सरंचना

रेवती नक्षत्र में जन्मे लोगों की लम्बाई मध्यम, रंग गोरा तथा शारीरिक गठन अत्यन्त उत्तम एवं अनुपातिक होगा.

शिक्षा

आप वैज्ञानिक समाधानों, एतिहासिक अनुसंधानों एवं प्राचीन संस्कृति में रुचि रखेंगे. इन तीन क्षेत्रों में से किसी एक क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता हेतु आप जनप्रसिद्ध होंगे. उल्लेखनीय है कि प्राचीन संस्कृति में ज्योतिषशास्त्र तथा खगोल विज्ञान दोनों ही सम्मिलित हैं.

आप एक अच्छे ज्योतिषचार्य या कवि अथवा एक उत्तम फीजिशियन होंगे. यदि आप सरकारी प्रतिष्ठान में कार्यरत हैं तो आप अपने विभाग के सफलतम व्यक्ति होंगे. रेवती नक्षत्र में जन्मे लोग अधिकाशतः विदेश में ही बसते हैं. यहाँ "विदेश" से हमारा तात्पर्य जन्मस्थान से दूर किसी स्थान से भी है. आप अपने प्रयासों एवं कठोर परिश्रम से ही उन्नति करेंगे. आपकी कुशाग्र बुद्धि तथा सामर्थ्य आपके विशेष नैसर्गिक गुण होंगे, आप किसी एक कार्यक्षेत्र या नौकरी में अधिक लम्बे समय तक बंध कर नहीं रह पाते हैं.

जीवन में लम्बे समय तक आपको अपने कठोर परिश्रम के यथोचित प्रतिफल नहीं मिल पाते हैं. २३ वे वर्ष से २६ वें वर्ष की आयु अवधि उत्तम रहती है जबकि २६ से ४२ वर्ष का समय आर्थिक, मानसिक एवं सामाजिक समस्याओं से भरा रहेगा. ५० वें वर्ष के पश्चात ही आप पूर्ण स्थायित्व प्राप्त कर निश्चिन्त जीवन जी पाते हैं.

पारिवारिक जीवन

आप एक स्वनिर्मित व्यक्ति होंगे. तथा अपनी सफलता की सीढीयाँ आप किसी की सहायता के बिना चढ़ेंगे. दूसरे शब्दों में कहें तो – आप अपने रिश्तेदारों तथा मित्रों से अनुचित लाभ नहीं उठायेंगे. आपका वैवाहिक जीवन उत्तम होगा. आपका जीवन साथी समझदार तथा समन्जस्यपूर्ण स्वभाव का होगा.

स्वास्थ

आप ज्वर, पेचिश या दंत विकार अथवा कान की किसी समस्या से पीड़ित हो सकते हैं.

रवि –– मूल –– चरण –– 1

यदि बुद्ध भी यहाँ स्थित है तो आपके पिता विद्वान तथा देवतानुल्य होंगे, आपके पिता कई निर्धनों का भरण पोषण तथा दानशीलता के कार्य करेंगे

बुध –– मूल –– चरण –– 2

यदि शुक्र तथा राहु भी यहाँ स्थित है तो प्रारम्भ में आप एक इंजीनियर होंगे किन्तु बाद में आप अपना उद्योग व्यवसाय आरम्भ कर देंगे, सामान्यतः आपका जीवन सुखपूर्ण होगा, यदि बुद्ध अकेला यहाँ स्थित है तो आप सरकारी सेवा में साधारण से पद पर कार्यरत होंगे.

शुक्र –– विशाखा –– चरण –– 1

यदि शुक्र शनि के साथ है तो आप बुद्धिजीवी होंगे तथा सरकारी सेवा में कार्यरत होंगे, आपको दो बार विवाह करना पड़ेगा, २४ वे वर्ष के पश्चात का समय अनुकूल होगा, ५७ वे वर्ष के बाद आप अपना निवास बदलते हैं, यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा है तो आप क्रय–विक्रय के कार्य के विशेषज्ञ होंगे तथा अपने परिवार के प्रिय होंगे.

मंगल –– अरिद्रा –– चरण –– 2

सीखने की तीव्र क्षमता का आपको दैविक वरदान होगा. आप साहसी होंगे तथा धन–सम्पदा का आपको आशीर्वाद होगा. आप प्रकृति प्रेमी होंगे तथा प्रकृति के निकट रहने की कोशिश करेंगे. आप लकड़ी से सम्बन्धित व्यापार अथाव सेवाओं में जैसे लकड़ी का व्यापार, वन अधिकारी या लकड़ी से बने सामान का क्रय–विक्रय आदि में कार्यरत हो सकते हैं. तेज धार वाली वस्तुओं से कार्य करते समय आपको अति सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए.

गुरु –– मूल –– चरण –– 2

आप सामाजिक स्तर की दृष्टि से एक राजा समान होंगे, तथा इस ही स्तर की शक्ति एवं सम्पन्नता का आनन्द उठायेंगे; यदि बृहस्पति पर शुक्र की दृष्टि हो तो आपको कुटिल मित्रों तथा कुटिल स्त्रियों से समस्या हो सकती है.

शनि –– पूर्व फाल्गुनी –– चरण –– 1

आपके प्रारम्भिक जीवन में आपके हिस्से कुछ अधिक ही समस्याऐं आती हैं यदि शनि अकेला यहॉ स्थित है तथा उस पर बृहस्पति की दृष्टि नहीं है तो आप सर तथा मस्थिष्क के विकारों से पीड़ित हो सकते हैं.

चन्द्र –– रेवती –– चरण –– 4

इस चरण में स्थित चन्द्रमा आपके माता–पिता हेतु अनुकूल नहीं होगा, यदि चन्द्र इस चरण में हो, पुनर्वसु नक्षत्र आपका लग्न हो तथा सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में हो तो बाल्यकाल में आपका स्वास्थ क्षीण रहेगा.

राहु –– सतभिषा –– चरण –– 1

यहाँ स्थित राहु पर सूर्य एवं बुद्ध की दृष्टि है तो आप छाती तथा फेफड़ो से सम्बन्धित विकारों से पीड़ित हो सकते हैं.

केतु –– माघ –– चरण –– 3

इस स्थिति में केतु उच्चस्थ बृहस्पति और शुक्र के समान परिणाम देता है. आप उच्च विद्वान तथा सरकार में उच्चस्तरीय अधिकारी होंगे. आप एक विशाल उद्योग साम्राज्य के स्वामी भी हो सतके हैं.